॥ श्री सुधर्मास्वामीने नमः ॥

अहो ! श्रुतम् - स्वाध्याय संग्रह [१६]

लघुक्षेत्रसमास

[गाथा और अर्थ]

—: कर्ता :—

श्री रत्नशेखरसूरिजी म.सा.

—: गुजराती अनुवाद :—

पू.आ. श्री हेमचन्द्रसूरिजी म.सा.

—: संकलन :—

श्रुतोपासक

—: प्रकाशक :—

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार

शा. वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, साबरमती, अमदाबाद-380005

Mo. 9426585904

email - ahoshrut.bs@gmail.com

प्रकाशक : श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार

प्रकाशन : संवत २०७६

आवृत्ति : प्रथम

ज्ञाननिधि में से

पू. संयमी भगवंतो और ज्ञानभण्डार को भेट...

गृहस्थ किसी भी संघ के ज्ञान खाते में

५० रुपये अर्पण करके मालिकी कर सकते हैं।

प्राप्तिस्थान :

(१) **सरेमल जवेरचंद फाईनफेब (प्रा.) ली.**
672/11, बोम्बे मार्केट, रेलवेपुरा, अहमदाबाद-३८०००२
फोन : 22132543 (मो.) 9426585904

(२) **कुलीन के. शाह**
आदिनाथ मेडीसीन, Tu-02 शंखेश्वर कोम्पलेक्ष, कैलाशनगर, सुरत
(मो.) 9574696000

(३) **शा. रमेशकुमार एच. जैन**
A-901 गुंदेचा गार्डन, लालबाग, मुंबई-१२.
(मो.) 9820016941

(४) **श्री विनीत जैन**
जगद्गुरु हीरसूरीश्वरजी जैन ज्ञानभण्डार,
चंदनबाला भवन, १२९, शाहुकर पेठ के पास, मीन्ट स्ट्रीट, चेन्नाई-१
फोन : 044-23463107 (मो.) 9389096009

(५) **शा. हसमुखलाल शान्तीलाल राठोड**
७/८ वीरभारत सोसायटी, टीम्बर मार्केट, भवानीपेठ, पूना.
(मो.) 9422315985

मुद्रक : विरति ग्राफिक्स, अहमदाबाद, मो. **8530520629**

Email Id: mishrahemantkumar28@gmail.com

लघुक्षेत्रसमास

जंबूद्वीप अधिकार

वीरं जयसेहरपय-पइट्ठिअं पणमिऊण सुगुरुं च ।
मंदुत्ति ससरणट्ठा, खित्तविआराऽणुमुंछमि ॥१॥

अर्थः-संसार के मुकुटरूप मोक्षस्थान में प्रतिष्ठित श्रीवीरप्रभु को और सुगुरु को नमस्कार करके मन्द (अल्प) बुद्धि होने के कारण अपने स्मरण के लिए क्षेत्रविचार का मैं किंचित् वर्णन करता हूँ।(१)

तिरिएगरज्जुखित्ते, असंखदीवोदही ऊ ते सव्वे ।
उद्धारपलिअपणवीस-कोडिकोडीसमयतुल्ला ॥२॥

अर्थः-तिर्च्छालोक के एक रज्जू प्रमाण क्षेत्र में असंख्य द्वीप तथा समुद्र हैं । वे सारे द्वीप-समुद्र २५ कोडाकोडी उद्धार पल्योपम के समय प्रमाण हैं । (२)

कुरुसगदिणाविअंगुल-रोमे सगवारविहिअअडखंडे ।
बावन्नसयं सहस्सा, सगणउई वीसलक्खाणू ॥३॥

अर्थः-कुरुक्षेत्र के सात दिनों के भेड़ के एक उत्सेधअंगुल प्रमाण बाल के सात बार आठ टुकड़े करने से २०,९७,१५२ टुकड़े होते हैं। (३)

ते थूला पल्ले वि हु, संखिज्जा चेव हुंति सव्वेऽवि ।
ते इक्किक्क असंखे, सुहमे खंडे पकप्पेह ॥४॥

अर्थः-एक योजन के प्याले में भी वे सभी स्थूल टुकड़े संख्याता ही हैं। उन एक-एक टुकड़ों के असंख्य सूक्ष्म टुकड़े मानने चाहिए। (४)

सुहमाणुणिचिअउस्से-हंगुलचउकोसपल्लिघणवट्टे ।
पइसमयमणुग्गहनि-ट्ठिअम्मि उद्धारपलिउ त्ति ॥५॥

अर्थः- सूक्ष्म टुकड़ों से भरा हुआ, उत्सेधांगुल से ४ गाउ प्रमाणवाला गोल प्याला प्रत्येक समय टुकड़ा निकालने से जितने समय में खाली हो जाएँ, वह एक सूक्ष्म उद्धार पल्योपम है। (५)

पढमो जंबू बीओ, धायइसंडो अ पुक्खरो तइओ ।
वारुणिवरो चउत्थो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥
घयवरदीवो छट्ठो, इक्खुरसो सत्तमो अ अट्ठमओ ।
णंदीसरो अ अरुणो, णवमो इच्चाइ असंखिज्जा ॥७॥

अर्थः- पहला जंबूद्वीप, दूसरा धातकीखंड, तीसरा पुष्करवरद्वीप, चौथा वारुणिवरद्वीप, पाँचवाँ क्षीरवर द्वीप, छठा घृतवरद्वीप, सातवाँ इक्षुरसद्वीप, आठवाँ नंदीश्वरद्वीप, नौवाँ अरुणद्वीप इत्यादि असंख्य द्वीप हैं। (६,७)

सुपसत्थवत्थुणामा, तिपडोआरा तहाऽरुणाइआ ।
इगणामेऽवि असंखा, जाव य सूरावभास त्ति ॥८॥

अर्थः- सूर्यावभासद्वीप तक अतिसारी वस्तु के नामवाले, त्रिप्रत्यवतार, एक नाम के भी असंख्य अरुण इत्यादि द्वीप हैं। (८)

तत्तो देवे नागे, जक्खे भूए सयंभुरमणे अ ।
एए पंच वि दीवा, इगेगणामा मुणेअव्वा ॥९॥

अर्थः- उसके बाद देवद्वीप, नागद्वीप, यक्षद्वीप, भूतद्वीप तथा स्वयंभूरमण द्वीप - इन पाँचों द्वीपों को एक-एक नामवाला जानना चाहिए। (९)

पढमे लवणो बीए, कालोदहि सेसएसु सव्वेसु ।
दीवसमनामया जा, सयंभुरमणोदही चरमो ॥१०॥

अर्थः- पहले द्वीप के चारों ओर लवणसमुद्र समुद्र है, दूसरे द्वीप के चारों ओर कालोदधि है, शेष सभी द्वीपों के चारों ओर द्वीप के समान नामवाले समुद्र हैं और चरम स्वयंभूरमण समुद्र है। (१०)

बीओ तइओ चरमो, उदगरसा पढमचउत्थपंचमगा ।
छट्ठोऽवि सनामरसा, इक्खुरसा सेसजलनिहिणो ॥११॥

अर्थ:-दूसरा-तीसरा और अन्तिम ये तीन समुद्र पानी जैसे स्वादवाले हैं, पहला-चौथा-पाँचवाँ-छठा ये चार समुद्र अपने नाम जैसे स्वादवाले हैं। शेष सब समुद्र इक्षुरस के जैसे स्वादवाले है। (११)

जंबुद्दीव पमाणं-गुलिजोअणलक्खवट्टविक्खंभो ।
लवणाईआ सेसा, वलयाभा दुगुणदुगुणा य ॥१२॥

अर्थ:- जंबूद्वीप प्रमाणअंगुल से एक लाख योजन की चौड़ाईवाला और गोल है। शेष लवणसमुद्र इत्यादि समुद्र और द्वीप वलय जैसे तथा दुगुने-दुगुने विस्तारवाले हैं। (१२)

वयरामईहिं णिअणिअ-दीवोदहिमज्झगणिअमूलाहिं ।
अट्ठुच्चाहिं बारस-चउमूलेउवरिरुंदाहिं ॥१३॥
वित्थारदुगविसेसो, उस्सेहविभत्तखओ चओ होइ ।
इअ चूलागिरिकूडाइतुल्लविक्खंभकरणाहिं ॥१४॥
गाउदुगुच्चाइ तय-ट्ठभागरुंदाइ पउमवेईए ।
देसूणदुजोअणवर-वणाईं परिमंडिअसिराहिं ॥१५॥
वेईसमेण महया, गवक्खकडएण संपरित्ताहिं ।
अट्ठारसूणचउभत्त-परहिदारंतराहिं च ॥१६॥
अट्ठुच्चचउसुवित्थर-दुपाससक्कोसकुड्डदाराहिं ।
पुव्वाइमहड्ढिअ-देवदारविजयाइनामाहिं ॥१७॥
णाणामणिमयदेहलि-कवाडपरिघाइदारसोहाहिं ।
जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥१८॥

अर्थ:- वज्रमय, अपने-अपने द्वीपसमुद्रों के अन्दर जिनका मूल विस्तार माना गया है ऐसी, ८ योजन ऊँची, मूल में और ऊपर १२ व ४ योजन चौड़ी, (जिसमें) दोनों विस्तारों के अन्तर को ऊँचाई से भाग देने पर हानि और वृद्धि होती है ऐसी, मेरुपर्वत की चूलिका-मेरुपर्वत-पर्वतों के कूटों के समान जिनकी चौड़ाई का कारण है ऐसी, २ गाउ ऊँची, उसके आठवें भाग जितनी

चौड़ी, देशोन २ योजन चौड़ा सुन्दर वनवाली-पद्मवरवेदिका से शोभित मस्तकवाली, वेदिकासमान बड़े गवाक्षकटक (जाली) से घिरी हुई, १८ योजन न्यून परिधि को ४ से भाग देने पर जो आता है, उतने द्वारों के आंतरावाले, ८ योजन ऊँचा - ४ योजन चौड़ा - दोनों तरफ १-१ गाउ के बारशाखवाली - द्वारोंवाली, पूर्व आदि दिशाओं में स्थित महर्द्धिक देवों से अधिष्ठित - विजय आदि नामवाले द्वारों से युक्त, विविध मणियों से मण्डित चौखट-दरवाजा-नकूचा आदि से सुशोभित दरवाजावाली जगती से वे सारे द्वीप समुद्र घिरे हुए हैं। (१३-१८)

वरतिणतोरणज्झयछ-त्तवाविपासायसेलसिलवट्टे ।
वेइवणे वरमंडव-गिहासणेसुं रमंति सुरा ॥१९॥

अर्थ:- सुन्दर घास, तोरण, ध्वज, छत्र, कुंड, प्रासाद, पर्वत, शिलापटवाली वेदिका तथा वनों के सुन्दर मण्डपों-गृहों-आसनों में देव रमण करते हैं। (१९)

इह अहिगारो जेसिं, सुराण देवीण ताणमुप्पत्ती ।
णिअदीवोदहिणामे, असंखईमे सणयरीसु ॥२०॥

अर्थ:- यहाँ जिनका अधिकार है उन देव-देवियों की उत्पत्ति अपने द्वीप-समुद्र के नामवाले असंख्यातमे द्वीप-समुद्र में अपनी नगरी में होती है। (२०)

जंबूदीवो छहिं कुल-गिरिहिं सत्तहिं तहेव वासेहिं ।
पुव्वावरदीहेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥२१॥

अर्थ:- जंबूद्वीप पूर्व-पश्चिम लम्बा छ कुलगिरि (वर्षधर पर्वत) और सात वर्षों (क्षेत्रों) से विभाजित है। वे क्रमशः इस प्रकार हैं - (२१)

हिमवं सिहरी महहिमव-रुप्पि णिसड्ढो अ णीलवंतो अ ।
बाहिरओ दुदु गिरिणो, उभओ वि सवेइआ सव्वे ॥२२॥

अर्थ:- (लघु) हिमवंत, शिखरी, महाहिमवंत, रुक्मी, निषध तथा

नीलवन्त - बाहर से दो-दो पर्वत हैं । वे सभी पर्वत दोनों तरफ से वेदिकावाले हैं । (२२)

भरहेरवय त्ति दुगं, दुगं च हेमवयरण्णवयरुवं ।
हरिवासरम्मयदुगं, मज्झि विदेहु त्ति सग वासा ॥२३॥

अर्थ:- भरत और ऐरवत ये दो, हिमवन्त और हिरण्यवन्त रूपी दो, हरिवर्ष और रम्यक् ये दो, बीच में महाविदेह - ये सात क्षेत्र हैं । (२३)

दो दीहा चउ वट्टा, वेअड्ढा खित्तछक्कमज्झम्मि ।
मेरु विदेहमज्झे, पमाणमित्तो कुलगिरीणं ॥२४॥

अर्थ:-छ क्षेत्रों के मध्य में दो लम्बे और चार गोल वैताढ्य पर्वत हैं, महाविदेह क्षेत्र के मध्य में मेरुपर्वत है । अब कुलगिरियों का प्रमाण कहूँगा । (२४)

इगदोचउसयउच्चा, कणगमया कणगरायया कमसो ।
तवणिज्जसुवेरुलिआ, बहिमज्झब्भितरा दो दो ॥२५॥

अर्थ:- बाहर के, मध्य के और अन्दर के दो-दो कुलगिरि १००, २००, ४०० योजन ऊँचे और क्रमशः (दो) सुवर्णमय, सुवर्णमय, रजतमय, तपनीयसुवर्णमय और वैडूर्यमय हैं । (२५)

दुगअडदुतीस अंका, लक्खगुणा कमेण नउअसयभइआ ।
मूलोवरि समरूवं, वित्थारं बिंति जुअलतिगे ॥२६॥

अर्थ:- लाख से गुणित तथा १९० से विभाजित क्रमशः २-८-३२ अंकों को तीनों युगलों में मूल में और ऊपर समान चौड़ाई कही गई है। (२६)

बावण्णहिओ सहसो, बार कला बाहिराण वित्थारो ।
मज्झिमगाण दसुत्तर-बायालसया दस कला य ॥२७॥
अब्भितराण दुकला, सोलसहस्सऽडसया सबायाला ।
चउचत्तसहस्स दो सय, दसुत्तरा दस कला सव्वे ॥२८॥

अर्थ:- बाहर के पर्वतों की चौड़ाई १,०५२ योजन १२ कला है । मध्य के पर्वतों की चौड़ाई ४,२१० योजन १० कला है । अन्दर के पर्वतों की चौड़ाई १६,८४२ योजन २ कला है । सबकी कुल चोड़ाई ४४,२१० योजन १० कला हैं । (२७-२८)

इगचउसोलसंका, पुव्वुत्तविहीइ खित्तजुयलतिगे ।
वित्थारं बिंति तहा, चउसट्ठिको विदेहस्स ॥२९॥

अर्थ:- लाख से गुणित तथा १९० से विभाजित करने से १-४-१६ अंक क्षेत्र के तीन युगलों का तथा ६४ अंक को महाविदेह का विस्तार कहा गया है । (२९)

पंच सया छव्वीसा, छच्च कला खित्तपढमजुअलम्मि ।
बीए इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥३०॥
चुलसीसय इगवीसा, इक्ककला तइअगे विदेहि पुणो ।
तित्तीससहस छसय, चुलसीआ तहा कला चउरो ॥३१॥

अर्थ:- क्षेत्रों के पहले जोड़े में ५२६ योजन ६ कला, दूसरे जोड़े में २,१०५ योजन ५ कला, तीसरे जोड़े में ८,४२१ योजन १ कला और महाविदेह में ३३,६८४ योजन ४ कला चौड़ाई है।

पणपन्नसहस सग सय, गुणणउआ णव कला सयलवासा ।
गिरिखित्तंकसमासे, जोअणलक्खं हवइ पुण्णं ॥३२॥

अर्थ:- सभी क्षेत्रों की चौड़ाई ५५,७८९ योजन ९ कला है। पर्वतों और क्षेत्रों की चौड़ाई का कुल योग करने से १ लाख योजन पूर्ण होता है। (३२)

पण्णाससुद्ध बाहिर-खित्ते दलिअम्मि दुसय अडतीसा ।
तिण्णि य कला य एसो, खंडचउक्कस्स विक्खंभो ॥३३॥

अर्थ:- बाहर के क्षेत्रों की चौड़ाई में से ५० बाद करके आधा करने से २३८ योजन ३ कला होता है - यह ४ खंडों की (उत्तर-दक्षिण भरत तथा उत्तर-दक्षिण ऐरवत की) चौड़ाई है । (३३)

गिरिउवरि सवेइदहा, गिरिउच्चत्ताउ दसगुणा दीहा ।
दीहत्तअद्धरुंदा, सव्वे दसजोअणुव्वेहा ॥३४॥

अर्थः- पर्वतों के ऊपर वेदिकावाले द्रह है । ये सभी द्रह पर्वतों की ऊँचाई से दस गुणा लम्बे, लम्बाई से आधी चौडे और दस योजन गहरे है। (३४)

बहि पउमपुंडरीया, मज्झे ते चेव हुंति महपुव्वा ।
तेगच्छिकेसरीआ, अब्भिंतरिआ कमेणेसुं ॥३५॥

अर्थः- वे द्रह बाहर पद्म और पुण्डरीक, मध्य में महापूर्वक के वे ही नाम (महापद्म-महापुण्डरीक) और अन्दर के तिगिच्छि-केसरी नाम के हैं। उनमें क्रमशः (३५)

सिरिलच्छी हिरिबुद्धी, धीकीत्ती नामियाउ देवीओ ।
भवणवइओ पलिओ-वमाउ वरकमलणिलयाओ ॥३६॥

अर्थः-श्री-लक्ष्मी-ह्री-बुद्धि-धी-कीर्ति नाम की, १ पल्योपम आयुष्यवाली, सुन्दर कमल में रहनेवाली भवनपति देवियाँ हैं। (३६)

जलुवरि कोसदुगुच्चं, दहवित्थरपणसयंसवित्थारं।
बाहल्लवित्थरद्धं, कमलं देवीण मूलिल्लं ॥३७॥

अर्थः- देवियों का मूल कमल पानी से ऊपर दो गाउ ऊँचा, द्रह के विस्तार के ५००वें भाग की चौड़ाईवाला और चौड़ाई से आधी मोटाईवाला है । (३७)

मूले कंदे नाले, तं वयरारिट्ठवेरुलिअरूवं ।
जंबुणयमज्झतवणि-जबहिअदलं रत्तकेसरिअं ॥३८॥

अर्थः- वह कमल मूल में - कंद में - नाल में वज्र का - अरिष्टरत्न का - वैडूर्य का, जांबुनदसुवर्ण के मध्य पत्तोंवाला, तपनीय सुवर्ण के बाहर के पत्तोंवाला और लाल केसरावाला है । (३८)

कमलद्धपायपिहुलु-च्चकणगमयकण्णिगोवरिं भवणं ।
अद्धेगकोसपिहुदी-हचउदसयचालधणुहुच्चं ॥३९॥

अर्थः- कमल के (विस्तार के) आधे और चौथाई भाग की चौड़ाई तथा ऊँचाईवाली सुवर्ण की कार्णिका के ऊपर आधा और एक गाउ चौड़ा-लम्बा और १,४४४ धनुष्य ऊँचा भवन है । (३९)

पच्छिमदिसि विणु धणुपण-सय उच्च ढाइज्जसय पिहुपवेसं ।
दारतिगं इह भवणे, मज्झे दहदेविसयणिज्जं ॥४०॥

अर्थः- इस भवन में पश्चिम दिशा के अतिरिक्त ५०० धनुष्य ऊँचे और २५० धनुष्य चौड़े प्रवेशवाले तीन द्वार हैं और बीच में द्रहदेवी की शय्या है । (४०)

तं मूलकमलद्धप्प-माणकमलाण अडहिअसएणं ।
परिक्खित्तं तब्भवणेसु भूसणाईणि देवीणं ॥४१॥

अर्थः- वह मूलकमल मूलकमल के आधे प्रमाणवाले १०८ कमलों के द्वारा आच्छादित है। उसके भवन में देवियों के आभूषण आदि हैं। (४१)

मूलपउमाउ पुव्विं, महयरियाणं चउण्ह चउ पउमा ।
अवराइ सत्त पउमा, अणिआहिवईण सत्तण्हं ॥४२॥

अर्थः- मूलकमल से पूर्व में चार महत्तरिका के चार कमल हैं, पश्चिम में ७ सेनाधिपति के ७ कमल हैं। (४२)

वायव्वाइसु तिसु सुरि-सामण्णसुराण चउसहस पउमा ।
अट्ठदसबारसहसा, अग्गेआइसु तिपरिसाणं ॥४३॥

अर्थः- वायव्य आदि तीन दिशाओं में देवियों के सामानिक देवों के ४,००० कमल हैं, अग्नेय आदि तीन दिशाओं में तीन पर्षदा के ८,०००-१०,०००-१२,००० कमल हैं । (४३)

इअ बीअपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु देवीणं ।
चउ चउ पउमसहस्सा, सोलससहसाऽऽयरक्खाणं ॥४४॥

अर्थः- यह दूसरा वलय है । तीसरे वलय में चारों दिशाओं में देवियों के १६,००० आत्मरक्षक देवों के ४०००-४००० कमल हैं ।

अभिओगाइ तिवलए, दुतीसचत्ताडयाललक्खाइं ।
इगकोडि वीस लक्खा, सड्ढा वीसं सयं सव्वे ॥४५॥

अर्थः- तीन वलय में आभियोगिक आदि देवों के ३२ लाख, ४० लाख और ४८ लाख कमल हैं। कुल १,२०,५०,१२० कमल हैं। (४५)

पुव्वावरमेरुमुहं, दुसु दारतिगं पि सदिसि दहमाणा ।
असिईभागपमाणं, सतोरणं णिग्गयणईअं ॥४६॥

अर्थः- दो द्रहों में अपनी दिशा में द्रह के प्रमाण से ८०वें भाग के प्रमाणवाले, तोरणवाले, जिनमें से नदी निकलती है, ऐसे पूर्व में, पश्चिम में और मेरुपर्वत की ओर तीन द्वार हैं। (४६)

जामुत्तरदारदुगं, सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा ।
सदिसि दहासिईभागा, तयद्धमाणा य बाहिरिया ॥४७॥

अर्थः- शेष द्रहों में दक्षिण में और उत्तर में दो द्वार हैं । उसमें मेरुपर्वत की तरफ के द्वार अपनी दिशा में द्रह के ८०वें भाग के प्रमाणवाले हैं और बाहर के द्वार उससे आधे प्रमाणवाले हैं। (४७)

गंगा सिंधु रत्ता, रत्तवई बाहिरं णइचउक्कं ।
बहिदहपुव्वावरदा-रवित्थरं वहइ गिरिसिहरे ॥४८॥

अर्थः- बाहर के द्रह के पूर्व-पश्चिम द्वार जितने विस्तारवाली गंगा, सिन्धु, रक्ता, रक्तवती ये चार बाहर की नदियाँ पर्वत के शिखर पर बहती हैं । (४८)

पंच सय गंतु णिअगा-वत्तणकूडाउ बहिमुहं वलइ ।
पणसयतेवीसेहिं, साहिअतिकलाहिं सिहराओ ॥४९॥
णिवडइ मगरमुहोवम-वयरामयजिब्भिआइ वयरतले ।
णिअगे णिवायकुंडे, मुत्तावलिसमपवाहेण ॥५०॥

अर्थः- (वे नदियाँ) ५०० योजन तक जाकर अपने आवर्तनकूट से बाहर की ओर बहती हैं । फिर शिखर के ऊपर ५२३ योजन ३ कला बहती है । उसके बाद शिखर पर से मगरमच्छ के मुख के समान भारी जिह्विका से मुक्तावली के समान प्रवाह से वज्र के तलेवाले अपने निपातकुंड में गिरती है। (५०)

दहदारवित्थराओ, वित्थरपण्णासभागजड्डाओ ।
जड्डत्ताओ चउगुण-दीहाओ सव्वजिब्भीओ ॥५१॥

अर्थः- सारी जिह्विकाएँ द्रह के द्वार जितने विस्तारवाली, विस्तार के ५०वें भाग जितनी मोटी और मोटाई से ४ गुणी लम्बी है। (५१)

कुंडंतो अडजोअण-पिहुलो जलउवरि कोसदुगमुच्चो ।
वेइजुओ णइदेवी-दीवो दहदेविसमभवणो ॥५२॥

अर्थः- कुंड के मध्य में ८ योजन चौड़ा, पानी के ऊपर २ गाउ ऊँचा, वेदिकावाला, द्रहदेवी के समान भवनवाला नदीदेवी का द्वीप है। (५२)

जोअणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुलवेइतिदुवारा ।
एए दसुंड कुंडा, एवं अण्णे वि णवरं ते ॥५३॥

अर्थः- यह कुंड ६० योजन चौड़ा, ६$\frac{1}{4}$ योजन चौड़ा वेदिका के तीन द्वारवाला और १० योजन गहरा है। इस प्रकार दूसरे कुंड भी हैं। (५३)

एसिं वित्थारतिगं, पडुच्च समदुगुणचउगुणट्ठगुणा ।
चउसट्ठिसोलचउदो, कुंडा सव्वेवि इह णवई ॥५४॥

अर्थः-इन कुंडों के तीन विस्तारों का (कुंड के विस्तार को, द्वीप के विस्तार को और वेदिका के द्वार के विस्तार को) आश्रय लेकर ६४, १६,४, २ कुंडों क्रमशः समान, दोगुने, ४ गुणे और आठ गुणे हैं, इस जंबूद्वीप में कुल ९० कुंड हैं। (५४)

एअं च णइचउक्कं, कुंडाओ बहिदुवारपरिवूढं ।
सगसहसणइसमेअं, वेअड्ढगिरिं पि भिंदेइ ॥५५॥

तत्तो बाहिरखित्त-द्धमज्झओ वलइ पुव्वअवरमुहं ।
णइसत्तसहससहिअं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥५६॥

अर्थः- ये चार नदियाँ कुंड के बाहर के द्वार से निकलकर ७,००० नदियों से युक्त होकर वैताढ्यपर्वत को भी भेदती हैं। उसके बाद बाहर के अर्धक्षेत्र के मध्य में से पूर्व-पश्चिम की ओर मुड़ती हैं और ७,००० नदियों के साथ जगती के नीचे से समुद्र में मिलती हैं। (५६)

धुरि कुंडदुवारसमा, पज्जंति दसगुणा य पिहुलत्ते ।
सव्वत्थ महणईओ, वित्थरपण्णासभागुंडा ॥५७॥

अर्थः- वे नदियाँ प्रारम्भ में कुंड के द्वार जितनी चौड़ी होती हैं और अन्त में १० गुणी चौड़ी होती हैं। सभी महानदियाँ चौड़ाई के ५०वें भाग जितनी गहरी होती हैं। (५७)

पणखित्तमहणईओ, सदारदिसि दहविसुद्धगिरिअद्धं ।
गंतूण सजिब्भीहिं, णिअणिअकुंडेसु णिवडंति ॥५८॥
णिअजिब्भिअपिहुलत्ता, पणवीसंसेण मुत्तु मज्झगिरिं ।
जाममुहा पुव्वुदहिं, इअरा अवरोअहिमुविंति ॥५९॥

अर्थः- पाँच क्षेत्रों की महानदियाँ अपने द्वार की दिशा में पर्वत के विस्तार से द्रह के विस्तार बाद करके उससे आधे तक जाकर अपनी जिह्विका के द्वारा अपने-अपने कुंडों में गिरती हैं। अपनी जिह्विका की चौड़ाई के २५वें भाग जितनी दूर मध्य के पर्वत (वृत वैताढ्य पर्वत-मेरुपर्वत) को छोड़कर दक्षिणमुखी नदी पूर्वसमुद्र में और उत्तरमुखी नदी पश्चिमसमुद्र में जाती हैं। (५९)

हेमवई रोहिअंसा, रोहिआ गंगदुगुणपरिवारा ।
एरण्णवए सुवण्ण-रुप्पकूलाओ ताण समा ॥६०॥

अर्थः-हिमवंतक्षेत्र में गंगानदी से दोगुने परिवारवाली रोहितांशा-

रोहिता नदियाँ बहती हैं। हिरण्यवंतक्षेत्र में उसके समान परिवारवाली सुवर्णकूला-रुप्यकूला नदियाँ बहती हैं। (६०)

हरिवासे हरिकंता, हरिसलिला गंगचउगुणनईआ ।
एसि समा रम्मयए, णरकंता णारिकंता य ॥६१॥

अर्थः- हरिवर्षक्षेत्र में गंगानदी से चारगुणी नदियोंवाली हरिकांता-हरिसलिला नदियाँ बहती हैं, रम्यकक्षेत्र में उसके समान परिवारवाली नरकांता-नारीकांता नदियाँ बहती हैं। (६१)

सीओआ-सीआओ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ।
णिवडइ पणलक्ख दुती-ससहस अडतीस णइसलिलं ॥६२॥

अर्थः- महाविदेह क्षेत्र में सीतोदा और सीता नदियाँ हैं, उनमें से प्रत्येक में ५३२०३८ नदियों का पानी गिरता है। (६२)

कुरुणइ चुलसीसहसा, छच्चेवंतरणइउ पइविजयं ।
दो दो महाणईओ, चउदसहस्सा उ पत्तेयं ॥६३॥

अर्थः-कुरुक्षेत्र में ८४,००० नदियाँ, छः अंतरनदियाँ, प्रत्येक विजय में दो-दो महानदियाँ, प्रत्येक की १४,००० नदियाँ। (इसप्रकार सीतोदा-सीता नदियों की प्रत्येक की ५,३२,०३८ नदियाँ होती हैं।) (६३)

अडसयरि महणईओ, बारस अंतरणइउ सेसाओ ।
परिअरणई चउद्दस, लक्खा छप्पण्ण सहसा य ॥६४॥

अर्थः- ७८ महानदियाँ, १२ अंतरनदियाँ तथा शेष १४,५६,००० परिवार नदियाँ (जंबूद्वीप में हैं।) (६४)

एगारडणवकूडा, कुलगिरिजुअलत्तिगे वि पत्तेअं ।
इइ छप्पण्ण चउ चउ, वक्खारेसु त्ति चउसट्ठी ॥६५॥

अर्थः- कुलगिरि के तीन जोड़ों में प्रत्येक के ऊपर ११,८,९ कूट हैं। ये ५६ कूट हैं। वक्षस्कार पर्वत के ऊपर ४-४ कूट हैं। इस प्रकार ६४ कूट हैं। (६५)

सोमणसगंधमाइणि, सग सग विज्जुप्पभि मालवंति पुणो ।
अट्ठट्ठ सयल तीसं, अड णंदणि अट्ठ करिकूडा ॥६६॥

अर्थ:- सोमनस-गंधमादन गजदंत पर्वतों के ऊपर ७-७ कूट हैं। विद्युत्प्रभ-माल्यवंत गजदंतपर्वतों के ऊपर ८-८ कूट हैं। सब मिलाकर ३० कूट है (भद्रशाल वनमें) ८ करिकूट हैं। (६६)

इअ पणसयउच्चा छासट्ठि-सउ(य) कूडा तेसु दीहरगिरीणं ।
पुव्वणइ मेरुदिसि, अंतसिद्धकूडेसु जिणभवणा ॥६७॥

अर्थ:- इसप्रकार ५०० योजन ऊँचे १६६ कूट हैं। उनमें लम्बे पर्वत (छः कुलगिरि, १६ वक्षस्कार पर्वत और ४ गजदंतगिरि) की (क्रमशः) पूर्वदिशा में, नदी की तरफ और मेरुपर्वत की दिशा में अन्तिम सिद्धकूटों के ऊपर जिनभवन हैं। (६७)

ते सिरिगिहाओ दोसय-गुणप्पमाणा तहेव तिदुवारा ।
णवरं अडवीसाहिअ-सयगुणदारप्पमाणमिहं ॥६८॥

अर्थ:- वे श्रीदेवी के घर की अपेक्षा २०० गुणा प्रमाणवाले और ३ द्वारवाले हैं, परन्तु यहाँ द्वार के प्रमाण १२८ गुणा हैं। (६८)

पणवीसं कोससयं, समचउरसवित्थडा दुगुणमुच्चा ।
पासाया कूडेसु, पणसयउच्चेसु सेसेसु ॥६९॥

अर्थ:- ५०० योजन ऊँचे शेष कूटों के ऊपर १२५ गाउ समचतुष्क विस्तारवाले और उससे दोगुने ऊँचे प्रासाद हैं। (६९)

बलहरिस्सहहरिकूडा, णंदणवणि मालवंति विज्जुपभे ।
ईसाणुत्तरदाहिण-दिसासु सहसुच्च कणगमया ॥७०॥

अर्थ:- नंदनवन में, माल्यवंत पर्वत के ऊपर और विद्युत्प्रभपर्वत के ऊपर क्रमशः ईशान, उत्तर और दक्षिण दिशाओं में १००० योजन ऊँचे, सुवर्णमय बलकूट, हरिस्सहकूट और हरिकूट हैं। (७०)

वेअड्ढेसु वि णव णव, कूडा पणवीसकोसउच्चा ते ।
सव्वे तिसय छडुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूडा ॥७१॥

अर्थ:-वैताढ्य पर्वत के ऊपर भी २५ गाउ ऊँचे ९-९ कूट हैं। कुल मिलाकर ३०६ हैं। उनके ऊपर भी पूर्व दिशा के छेडे पर सिद्धकूट है। (७१)

ताणुवरिं चेइहरा, दहदेवीभवणतुल्लपरिमाणा ।
सेसेसु अ पासाया, अद्धेगकोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥

अर्थ:-उसके ऊपर द्रहदेवी के भवन के समान परिमाणवाले चैत्य हैं। शेष कूटों के ऊपर १/२ गाउ और १ गाउ चौड़ा और ऊँचे प्रासाद हैं। (७२)

गिरिकरिकूडा उच्च-त्तणाउ समअद्धमूलुवरिरुंदा ।
रयणमया णवरि विअ-ड्ढमज्झिमा तिति कणगरूवा ॥७३॥

अर्थ:- पर्वतों के कूट और हरिकूट उँचाई जितने मूल में चौड़े हैं और ऊपर उससे आधे चौड़े हैं। ये कूट रत्नमय हैं, परन्तु वैताढ्य पर्वत के बीच के ३-३ कूट सुवर्णमय हैं। (७३)

जंबूणयरययमया, जगइसमा जंबुसामलीकूडा ।
अट्ठट्ठ तेसु दहदेवि-गिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥

अर्थ:- जंबूवृक्ष और शाल्मलीवृक्ष के ८-८ कूट जगती के समान प्रमाणवाले और क्रमशः जांबूनद सुवर्ण और रजत के हैं। उनके ऊपर द्रहदेवी के भवन के समान सुन्दर चैत्य हैं। (७४)

तेसि समोसहकूडा, चउतीसं चुल्लकुंडजुअलंतो ।
जंबूणएसु तेसु अ, वेअड्ढेसुं व पासाया ॥७५॥

अर्थ:- उसके (वृक्षकूटों के) समान प्रमाणवाले, छोटे कुंडों के जोड़ों के बीच, ३४ ऋषभकूट हैं। जांबूनद सुवर्ण के उन कूटों के ऊपर वैताढ्यपर्वत के ऊपर के प्रासाद के समान प्रासाद हैं। (७५)

पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवम्मि ।
ते पत्तेअं वरवण-जुआहि वेईहिं परिक्खित्ता ॥७६॥

अर्थ:- जंबूद्वीप में कुल ५२५ कूट हैं। प्रत्येक कूट सुन्दर वनों से युक्त वेदिकाओं से आच्छादित हैं। (७६)

छसयरिकूडेसु तहा, चूला चउवणतरुस जिणभवणा।
भणिया जंबुद्दीवे, सदेवया सेसठाणेसु ॥७७॥

अर्थ:- जंबूद्वीप में ७६ कूटों (कुलगिरि के ६ कूट, गजदंतगिरि के ४ कूट, वैताढ्य के ३४ कूट, वक्षस्कार पर्वतों के १६ कूट, जंबूवृक्ष के ८ कूट, शाल्मलीवृक्ष के ८ कूट) के ऊपर, मेरुपर्वत की चूलिका के ऊपर, ४ वनों में, जंबूवृक्ष-शाल्मलीवृक्ष के ऊपर जिनभवन कहे गए हैं। शेष स्थानों में देवता के भवन हैं। (७७)

करिकूडकुंडणइदह-कुरुकंचणयमलसमविअड्ढेसु।
जिणभवणविसंवाओ, जो तं जाणंति गीअत्था ॥७८॥

अर्थ:- करिकूट, कुंड, नदी, द्रह, कुरुक्षेत्र में कंचनगिरि, ४ यमक पर्वत, वृत्तवैताढ्य पर्वतों के ऊपर जिनभवन होने के जो विसंवाद हैं, उसे गीतार्थ जानते हैं। (७८)

पुव्वावरजलहिंता, दसुच्चदसपिहुलमेहलचउक्का।
पणवीसुच्चा पण्णा-सतीसदसजोअणपिहुत्ता ॥७९॥
वेईहिं परिक्खित्ता, सखयरपुरपण्णसट्ठिसेणिदुगा।
सदिसिंदलोगपालो-वभोगि उवरिल्लमेहलया ॥८०॥
दुदुखंडविहिअभरहे-रवया, दुदुगुरुगुहा य रुप्पमया।
दो दीहा वेअड्ढा, तहा दुतीसं च विजएसु ॥८१॥
णवरं ते विजयंता, सखयरपणपण्णपुरदुसेणीआ।
एवं खयरपुराइं, सगतीससयाइं चालाइं ॥८२॥

अर्थ:- पूर्व और पश्चिम समुद्र के किनारेवालें, १० योजन ऊँची - १० योजन चौड़ी ४ मेखलावाला, २५ योजन ऊँचा, ५०-३०-१० योजन चौड़ा, वेदिका से आवृत्त, विद्याधरों की ५० और ६० नगरों की

दो श्रेणीवाला, अपनी दिशा के इन्द्र के लोकपालों के उपभोग के योग्य ऊपर की मेखलावाला, भरत-ऐरवत के दो-दो भाग करनेवाला, दो-दो बड़ी गुफाओंवाला, चांदी के दो दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं तथा विजयों में ३२ दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं, परन्तु वे विजय तक के और विद्याधरों के ५५-५५ नगरों की दो श्रेणियोंवाला है। इसप्रकार ३,७४० विद्याधरों के नगर हैं। (७९-८२)

गिरिवित्थरदीहाओ, अडुच्चचउपिहुपवेसदाराओ।
बारसपिहुलाउ अडु-च्चयाउ वेअड्ढ दुगुहाओ ॥८३॥

अर्थ:- वैताढ्यपर्वत की चौड़ाई जितनी लम्बी, ८ योजन ऊँचे - ४ योजन चौड़े- ४ योजन प्रवेशवाले द्वारोंवाली, १२ योजन चौड़ी, ८ योजन ऊँची, वैताढ्य पर्वत की दो गुफाएँ हैं। (८३)

तम्मज्झदुओअणअं-तराउ तितिवित्थराउ दुणईओ।
उम्मग्गनिमग्गाओ, कडगाउ महाणईगयाओ ॥८४॥

अर्थ:- उन गुफाओं के मध्य में २ योजन के अन्तरवाली, ३-३ योजन चौड़ी उन्मग्ना और निमग्ना नाम की दो नदियाँ हैं। वे गुफाओं की दीवाल में से महानदियों में मिलती हैं। (८४)

इह पइभित्तिं गुणवण्णमंडले लिहइ चक्कि दुदुसमुहे।
पणसयधणुहपमाणे, बारेगडजोअणुज्जोए ॥८५॥

अर्थ:- इस गुफा में चक्रवर्ती ५०० घनुष्य प्रमाणवाला, (चौड़ाई में) १२ योजन, (लम्बाई में) १ योजन, (ऊँचाई में) ८ योजन प्रकाश करनेवाला आमने-सामने दो, प्रत्येक दीवाल के ऊपर ४९-४९ मंडल लिखते हैं। (८५)

सा तमिसगुहा जीए, चक्की पविसेई मज्झखंडंतो।
उसहं अंकिअ सो जी-ए वलइ सा खंडगपवाया ॥८६॥

अर्थ:- जिससे चक्रवर्ती मध्यखंड में प्रवेश करता है, वह तमिस्रा

गुफा है। ऋषभकूट को अंकित करके वह जिससे वापस जाता है, वह खंडप्रपात गुफा है। (८६)

कयमाल-नट्टमालय-सुराउ वद्धइणिबद्धसलिलाउ।
जा चक्की ता चिट्ठंति, ताओ उग्घडियदाराओ ॥८७॥

अर्थः-कृतमाल और नृत्तमाल देवों से अधिष्ठित, वर्धकीरत्न से बँधी हुई नदियोंवाली वे गुफाएँ, जहाँ तक चक्रवर्ती रहते हैं, वहाँ तक खुले द्वारवाली रहती है। (८७)

बहिखंडंतो बारस-दीहा नववित्थडा अउज्झपुरी।
सा लवणा वेअड्ढा, चउदहिअसयं चिगारकला ॥८८॥

अर्थः- बाहरी खंड के मध्य में १२ योजन लम्बी, ९ योजन चौड़ी, अयोध्यानगरी है। वह लवणसमुद्र और वैताढ्यपर्वत से ११४ योजन और ११ कला दूर है। (८८)

चक्किवसणइपवेसे, तित्थदुगं मागहो पभासो अ।
ताणंतो वरदामो, इह सव्वे बिउत्तरसयं ति ॥८९॥

अर्थः- चक्रवर्ती के वश में नदी के प्रवेशस्थान में मागध और प्रभास दो तीर्थ हैं। उन दोनों के बीच में वरदाम तीर्थ है। इस जंबूद्वीप में कुल १०२ तीर्थ हैं। (८९)

भरहेवरए छछअरयमयावसप्पिणिउसप्पिणीरूवं।
परिभमइ कालचक्कं, दुवालसारं सया वि कमा ॥९०॥

अर्थः- भरत और ऐरवत में छः-छः आरा की उत्सर्पिणी - अवसर्पिणी रूप, १२ आरा का कालचक्र हमेशा क्रमशः घूमता रहता है। (९०)

सुसमसुसमा य सुसमा, सुसमदुसमा य दुसमसुसमा य।
दुसमा य दुसमदुसमा, कमुक्कमा दुसु वि अरछक्कं ॥९१॥

अर्थः- दोनों उत्सर्पिणी में क्रम से और उत्क्रम से सुषमसुषम, सुषम, सुषमदुःषम, दुःषमसुषम, दुःषम और दुःषमदुःषम - ये छः आरा हैं। (९१)

पुव्वुत्तपल्लिसमसय-अणुग्गहणा णिट्ठिए हवइ पलिओ।
दसकोडिकोडिपलिएहिं सागरो होइ कालस्स ॥९२॥

अर्थः- पूर्वोक्त प्याला में से प्रत्येक सौ वर्ष के बाद बाल का एक टुकड़ा निकालने से प्याला खाली होता है, वह काल काल का एक पल्योपम है। १० कोडाकोडी पल्योपम से एक सागरोपम होता है। (९२)

सागरचउतिदुकोडा-कोडिमिए अरतिगे नराण कमा।
आऊ तिदुइगपलिआ, तिदुइगकोसा तणुच्चत्तं ॥९३॥

अर्थः- ४, ३, २ कोडाकोडी सागरोपम मापवाले तीन आरा में मनुष्यों का आयुष्य क्रमशः ३, २, १ पल्योपम है और शरीर की ऊँचाई क्रमशः ३, २, १ गाउ है। (९३)

तिदुइगदिणेहिं तुबरि-बयरामलमित्तु तेसिमाहारो।
पिट्ठकरंडा दोसय, छप्पण्णा तद्दलं च दलं ॥९४॥

अर्थः- उनका आहार क्रमशः ३, २, १ दिनों में और तुबेर, बैर और आंवला जितना होता है। उनकी पसलियाँ क्रमशः २५६, उससे आधी (१२८) और उससे आधी (६४) है। (९४)

गुणवण्णदिणे तह पनर-पणरअहिए अवच्चपालणया।
अवि सयलजिआ जुअला, सुमणसुरूवा य सुरगइआ ॥९५॥

अर्थः-उनका सन्तानपालन ४९ दिन और १५-१५ दिन अधिक (६४दिन, ८९ दिन) है। वे सम्पूर्ण पाँच इन्द्रियवाले, युगलिक, उत्तम मनवाले, सुन्दर रूपवाले और देवगति में जानेवाले हैं। (९५)

तेसि मत्तंग १ भिंगा २ तुडिअंगा ३ जोइ ४ दीव ५ चित्तंगा ६।
चित्तरसा ७ मणिअंगा, ८ गेहागारा ९ अणिअयक्खा १० ॥९६॥
पाणं १ भायण २ पिच्छण ३,
रविपह ४ दीवपह ५ कुसुम ६ माहारो ७।
भूसण ८ गिह ९ वत्थासण १०,
कप्पदुमा दसविहा दिंति ॥९७॥

अर्थ:- उन्हें मत्तंग, भृंग, त्रुटितांग, ज्योतिरंग, दीपांग, चित्रांग, चित्ररसांग, मणितांग, गेहाकार, अनियत (अनग्न) ये दस प्रकार के कल्पवृक्ष क्रमश: पानी, भाजन (बर्त्तन), नाटक, सूर्य की प्रभा, दीपक की प्रभा, पुष्प, आहार, आभूषण, घर, वस्त्र देते हैं। (९६, ९७)

मणुआउसम गयाई, हयाइ चउरंसजाइ अट्ठंसा।
गोमहिसुट्टखराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥९८॥
इच्चाइ तिरच्छाण वि, पायं सव्वारएसु सारिच्छं।
तइआरसेसि कुलगर-णयजिणधम्माइ उप्पत्ती ॥९९॥

अर्थ:-हाथी आदि मनुष्यायुष्य के समान आयुष्यवाले हैं, घोड़ा आदि मनुष्यायुष्य के चौथे भाग के आयुष्यवाले हैं, बकरा आदि मनुष्यायुष्य के आठवें भाग के आयुष्यवाले हैं, गाय-भैंस-ऊँट-गधे आदि मनुष्यायुष्य के पाँचवें भाग के आयुष्यवाले हैं, कुत्ते आदि मनुष्यायुष्य के दसवें भाग के आयुष्यवाले हैं, इत्यादि तिर्यंचों का आयुष्य भी प्राय: सभी आरों में समान होता है। जब तीसरा आरा बाकी रहता है, तब कुलकरों की, नीति की और जिनधर्म की उत्पत्ति होती है। (९८, ९९)

कालदुगे तिचउत्था-रगेसु एगूणणवइपक्खेसु।
सेसि गएसुं सिज्झंति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥१००॥

अर्थ:-दोनों काल (उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी) में तीसरे-चौथे आरे में ८९ पक्ष बाकी होने पर और बीत जाने पर पहले और अन्तिम भगवान सिद्ध होते हैं और जन्म लेते हैं। (१००)

बायालसहसवरसू-णिगकोडाकोडिअयरमाणाए।
तुरिए नराउ पुव्वा-ण कोडि तणु कोसचउरंसं ॥१०१॥

अर्थ:- ४२,००० वर्ष न्यून १ कोडाकोडी सागरोपम प्रमाणवाले तीसरे आरे में मनुष्यायुष्य १ पूर्वक्रोड वर्ष है और शरीरप्रमाण १ गाउ का चौथा भाग है। (१०१)

वरिसेगवीससहस-प्पमाणपंचमरए सगरुच्चा।
तीसहिअसयाउ णरा, तयंति धम्माइआणंतो ॥१०२॥

अर्थ:- २१,००० वर्ष प्रमाणवाले पाँचवें आरे में मनुष्य ७ हाथ ऊँचा और १३० वर्ष के आयुष्यवाला होता है। उसके (पाँचवें आरे के) अन्त होने पर धर्म आदि का अन्त हो जाता है। (१०२)

खारग्गिविसाईहिं, हाहाभूआकयाइपुहवीए।
खगबीय विअड्ढाइसु, णराइबीयं बिलाईसु ॥१०३॥

अर्थ:- क्षार-अग्नि-विष आदि से हाहाकार की गई पृथ्वी के ऊपर पक्षी का बीज वैताढ्य आदि पर्वतों में और मनुष्य आदि का बीज बिल आदि में होता है। (१०३)

बहुमच्छचक्कवहणइ-चउक्कपासेसु णव णव बिलाई।
वेअड्ढोभयपासे, चउआलसयं बिलाणेवं ॥१०४॥

अर्थ:- वैताढ्यपर्वत के दोनों ओर बहुत सी मछलियोंवाली और चक्र के मार्ग जितने प्रवाहवाली चार नदियों के बगल में ९-९ बिल हैं। इस प्रकार १४४ बिल हैं। (१०४)

पंचमसमछट्ठारे, दुकरुच्चा वीसवरिसआउ णरा।
मच्छासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा ॥१०५॥

अर्थ:- पाँचवें आरे के समान प्रमाणवाले छठे आरे में २ हाथ ऊँचे, २० वर्ष के आयुष्यवाले, मछली खानेवाले, खराब रूपवाले, क्रूर, दुर्गति में जानेवाले, बिलवासी मनुष्य हैं। (१०५)

णिल्लज्जा णिव्वसणा, खरवयणा पिअसुआइठिइरहिआ।
थीओ छवरिसगब्भा, अइदुहपसवा बहुसुआ य ॥१०६॥

अर्थ:- वे लज्जारहित, वस्त्ररहित, कठोर वचन बोलनेवाले, पिता-पुत्र आदि की मर्यादा से रहित हैं, स्त्रियाँ छ: वर्ष में गर्भ को धारण करनेवाली, अत्यन्त दु:खपूर्वक जन्म देनेवाली और बहुत से पुत्रोंवाली होती हैं। (१०६)

इअ अरछक्केणवस-प्पिणि त्ति ओसप्पिणी वि विवरीआ ।
वीसं सागरकोडा-कोडीओ कालचक्कम्मि ॥१०७॥

अर्थः- इस प्रकार छः आरा के द्वारा अवसर्पिणी होती है। उत्सर्पिणी भी विपरीत है। कालचक्र में २०कोडाकोडी सागरोपम है। (१०७)

कुरुदुगि हरिरम्मयदुगि, हेमवएरण्णवइदुगि विदेहे ।
कमसो सयावसप्पिणि, अरयचउक्काइसमकालो ॥१०८॥

अर्थः- दो कुरु में, हरिवर्ष-रम्यक् इन दो क्षेत्रों में, हिमवंत-हिरण्यवंत इन दो क्षेत्रों में, महाविदेह क्षेत्र में हमेशा क्रमशः अवसर्पिणी के चार आरा के समान काल है। (१०८)

हेमवएरण्णवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ।
सद्दावइ विअडावइ, गंधावइ मालवंतक्खा ॥१०९॥
चउवट्टविअड्ढा सा-इअरुणपउमप्पभाससुरवासा ।
मूलुवरि पिहुत्ते तह, उच्चत्ते जोयणसहस्सं ॥११०॥

अर्थः-हिमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष और रम्यक् में रत्न के, शब्दापाती-विकटापाती-गंधापाती-माल्यवंत नामक, स्वाति-अरुण-पद्म-प्रभास देवों के आवासरूप चार वृत्तवैताढ्यपर्वत हैं। उनके मूल में और ऊपर चौड़ाई और ऊँचाई १,००० योजन है। (१०९-११०)

मेरु वट्टो सहस्स-कंदो लक्खूसिओ सहस्सुवरिं ।
दसगुण भुवि तं सणवइ, दसिगारंसं पिहुलमूले ॥१११॥

अर्थः- मेरुपर्वत गोल है, १,००० योजन कंद (भूमि में) है, १ लाख योजन ऊँचा है, ऊपर १,००० योजन चौड़ा है, भूमि पर १० गुणा चौड़ा है, मूल में नब्बे सहित वह और दस ग्यारहवें भाग जितना (१०,०९० १०/११ योजन) चौड़ा है। (१११)

पुढवुवलवयरसक्कर-मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ।
फलिहंकरययकंचण-मओ अ जंबूणओ सेसो ॥११२॥

अर्थः- मेरुपर्वत का कंद पृथ्वी, पत्थर, हीरा, कंकड़वाला है। ऊपर सौमनस वन तक स्फटिक, अंक, रजत सुवर्ण का है। शेषभाग जांबूनद सुवर्ण का है। (११२)

तदुवरि चालीसुच्चा, वट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला ।
वेरुलिया वरचूला, सिरिभवणपमाणचेइहरा ॥११३॥

अर्थः- मेरुपर्वत के ऊपर ४० योजन ऊँची, गोल, मूल में और ऊपर १२ योजन और ४ योजन चौड़ी, वैडूर्यरत्न की, श्रीदेवी के भवन प्रमाण के चैत्यवाली श्रेष्ठ चूलिका है। (११३)

चूलातलाउ चउसय, चउणवई वलयरूवविक्खंभं ।
बहुजलकुंडं पंडगवणं च सिहरे सवेईअं ॥११४॥

अर्थः- मेरुपर्वत के शिखर पर चूलिका की तलहटी से ४९४ योजन चौड़ाईवाला, वलयरूप, बहुत पानी के कुंडवाला वेदिका सहित पंडकवन है। (११४)

पण्णासजोअणेहिं, चूलाओ चउदिसासु जिणभवणा ।
सविदिसि सक्कीसाणं, चउवाविजुआ य पासाया ॥११५॥

अर्थः- (पंडकवन में) चूलिका से ५० योजन के बाद चारों दिशाओं में जिनभवन हैं और विदिशा में शक्र और ईशानेन्द्र के चार वावडियों से युक्त प्रासाद हैं। (११५)

कुलगिरिचेइहराणं, पासायाणं चिमे समट्ठगुणा ।
पणवीसरुंददुगुणा-यामाउ इमाउ वावीओ ॥११६॥

अर्थः- ये (चैत्य और प्रासाद) कुलगिरि के चैत्यों और प्रासादों के समान और आठगुणा हैं। ये वावडियाँ २५ योजन चौड़ी और दोगुनी लम्बाईवाली हैं। (११६)

जिणहरबहिदिसि जोअण-पणसय दीहद्धपिहुल चउउच्चा ।
अद्धससिसमा चउरो, सिअकणयसिला सवेईआ ॥११७॥

अर्थ:- जिनभवनों के बाहर की दिशा में ५०० योजन लम्बी, आधी चौड़ी, ४ योजन ऊँची, अर्धचन्द्र के समान, वेदिकावाली, सफेद सुवर्ण की चार शिलाएँ हैं। (११७)

सिलमाणट्ठसहस्सं-समाणसीहासणेहिं दोहिं जुआ।
सिल पंडुकंबला रत्तकंबला पुव्वपच्छिमओ ॥११८॥

अर्थ:- शिला के प्रमाण के ८,०००वें भाग के प्रमाणवाले दो सिंहासनों से युक्त, पूर्व-पश्चिम में पांडुकंबला और रक्तकंबला नामकी शिलाएँ हैं। (११८)

जामुत्तराउ ताओ, इगेगसीहासणाउ अइपुव्वा।
चउसु वि तासु नियासण-दिसि भवजिणमज्जणं होइ ॥११९॥

अर्थ:-दक्षिण और उत्तर में १-१ सिंहासनवाली 'अति' पूर्वक नामवाली वे शिलाएँ हैं। उन चारों शिलाओं के ऊपर अपने सिंहासन की दिशा में उत्पन्न हुए तीर्थंकर का जन्माभिषेक होता है। (११९)

सिहरा छत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ पंच सए।
पिहुलं सोमणसवणं, सिलविणु पंडगवणसरिच्छं ॥१२०॥

अर्थ:- शिखर से ३६,००० योजन पर मेखला में ५०० योजन चौड़ा, शिला से रहित पंडकवन के समान सौमनस वन है। (१२०)

तब्बाहिरि विक्खंभो, बायालसयाइं दुसयरि जुआइं।
अट्ठेगारसभागा, मज्झे तं चेव सहसूणं ॥१२१॥

अर्थ:- उसके बाहर मेरुपर्वत की चौड़ाई ४,२७२ ८/११ योजन है। उसके अन्दर १,००० योजन न्यून वही चौड़ाई है। (१२१)

तत्तो सड्ढदुसट्ठी-सहसेहिं णंदणं पि तह चेव।
णवरि भवणपासायं-तरट्ठ दिसिकुमरिकूडा वि ॥१२२॥

अर्थ:-वहाँ से ६२,५०० योजन की दूरी पर नंदनवन भी उसी प्रकार है, परन्तु जिनभवनों और प्रासादों के अन्तर की ८ दिशाओं में ८ दिक्कुमारियों के कूट भी हैं। (१२२)

णवसहस णवसयाइं, चउपण्णा छच्चिगारहाया य।
णंदणबहिविक्खंभो, सहसूणो होइ मज्झम्मि ॥१२३॥

अर्थ:- नंदनवन के बाहर मेरुपर्वत की चौड़ाई ९,९५४ ६/११ योजन है। अन्दर की चौड़ाई १,००० योजन न्यून है। (१२३)

तदहो पंचसएहिं, महिअलि तह चेव भद्दसालवणं।
णवरमिह दिग्गइ च्चिअ, कूडा वणवित्थरं तु इमं ॥१२४॥

अर्थ:- उसके (नंदनवन के) नीचे ५०० योजन के बाद पृथ्वीतल के ऊपर उसी प्रकार भद्रशालवन है, परन्तु यहाँ दिग्गज के समान कूट हैं। वन का विस्तार इस प्रकार है। (१२४)

बावीस सहस्साइं, मेरुओ पुव्वओ अ पच्छिमओ।
तं चाडसीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरओ ॥१२५॥

अर्थ:- मेरुपर्वत के पूर्व में और पश्चिम में २२,००० योजन है। ८८ से विभाजित दक्षिण में और उत्तर में वन का प्रमाण है। (१२५)

छव्वीस सहस चउ सय, पणहत्तरि गंतु कुरुणइपवाया।
उभओ विणिग्गया गय-दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥१२६॥

अर्थ:-कुरुक्षेत्र की नदी के प्रपातकुंडों से दोनों ओर २६,४७५ योजन जाकर मेरुपर्वत के सामने निकले हुए चार गजदन्त पर्वत हैं। (१२६)

अग्गेआइसु पयाहि-णेण सिअरत्तपीअनीलाभा।
सोमणसविज्जुप्पह-गंधमायणमालवंतक्खा ॥१२७॥

अर्थ:- (वे पर्वत) अग्नि आदि कोणें में प्रदक्षिणा के क्रम से श्वेत-लाल-पीले-नीले वर्णों के सौमनस, विद्युत्प्रभ, गंधमादन और माल्यवन्त नामक पर्वत हैं। (१२७)

अहलोयवासिणीओ, दिसाकुमारीउ अट्ठ एएसिं।
गयदंतगिरिवराणं, हिट्ठा चिट्ठंति भवणेसु ॥१२८॥

अर्थ:- अधोलोकवासी ८ दिक्कुमारियाँ इन आठ गजदंतपर्वतों के नीचे भवनों में रहती हैं। (१२८)

धुरि अंते चउपणसय, उच्चत्ति पणसयाऽसिसमा ।
दीहत्ति इमे छकला, दसय णवुत्तर सहसतीसं ॥ १२९॥

अर्थ:- वे प्रारम्भ में और अन्त में ४००-५०० योजन ऊँचा, ५०० योजन चौड़ा और तलवार जैसे हैं। ये पर्वत ३०,२०९ योजन ६ कला लम्बे हैं। (१२९)

ताणंतो देवुत्तर-कुराउ चंदद्धसंठियाउ दुवे ।
दससहसविसुद्धमहा-विदेहदलमाणपिहुलाओ ॥१३०॥

अर्थ:- उनके बीच में अर्धचन्द्र के आकार के दो देवकुरु-उत्तरकुरु क्षेत्र हैं। वह महाविदेह क्षेत्र के विस्तार में से १०,००० योजन बाद करके उससे आधा चौड़ा है। (१३०)

णइपुव्वावरकूले, कणगमया बलसमा गिरी दो दो ।
उत्तरकुराइ जमगा, विचित्तचित्ता य इअरीए ॥१३१॥

अर्थ:-(सीतोदा-सीता) नदी के पूर्व-पश्चिम किनारे सुवर्ण के, बलकूट के समान दो-दो पर्वत हैं। उत्तरकुरु में यमकसमकपर्वत हैं और दूसरे (देवकुरु) में विचित्र-चित्र पर्वत हैं। (१३१)

णइवहदीहा पण पण, हरया दुदुदारया इमे कमसो ।
णिसहो तह देवकुरु, सूरो सुलसो य विज्जुपभो ॥१३२॥
तह णीलवंत उत्तर-कुरु चंदेरवय मालवंतु त्ति ।
पउमदहसमा णवरं, एएसु सुरा दहसणामा ॥१३३॥

अर्थ:- (देवकुरु-उत्तरकुरु) में नदी के प्रवाह में लम्बे, दो-दो द्वारवाले क्रमश- पाँच-पाँच ह्रद हैं - निषध, देवकुरु, सूर, सुलस और विद्युत्प्रभ तथा नीलवंत, उत्तरकुरु, चन्द्र, ऐरवत और माल्यवंत। ये ह्रद पद्मद्रह के समान हैं, परन्तु इन द्रहों में द्रह के नामवाले देव हैं। (१३२, १३३)

अड सय चउतीस जोअ-णाइं तह सेगसत्तभागाओ ।
इक्कारस य कलाओ, गिरिजमलदहाणमंतरयं ॥१३४॥

अर्थ:- कुलगिरि, यमलगिरि, द्रह और (मेरुपर्वत) का अन्तर ८३४ योजन ११ १/७ कला है। (१३४)

दहपुव्वावरदसजो-यणेहि दस दस विअड्ढकूडाणं ।
सोलसगुणप्पमाणा, कंचणगिरिणो दुसय सव्वे ॥१३५॥

अर्थ:- द्रहों की पूर्व-पश्चिम दिशा में १० योजन दूर वैताढ्यपर्वत के कूटों की अपेक्षा १६ गुणा अधिक प्रमाणवाले १०-१० कंचनगिरि पर्वत हैं। वे सभी कुल २००हैं। (१३५)

उत्तरकुरुपुव्वद्धे, जंबूणय जंबुपीढमंतेसु ।
कोसदुगुच्चं कमि वड्ढमाणु चउवीसगुणं मज्झे ॥१३६॥

अर्थ:- उत्तरकुरु के पूर्वार्द्ध में जांबूनद सुवर्ण का , अन्त में दो गाउ ऊँचा, क्रमशः बढ़ते हुए बीच में २४ गुणा ऊँचा जंबूपीठ है। (१३६)

पणसयवट्टपिहुत्तं, परिखित्तं तं च पउमवेईए ।
गाउदुगद्धुच्चपिहु-त्तचारुचउदारकलिआए ॥१३७॥

अर्थ:- वह ५०० योजन गोल विस्तारवाला, दो गाउ ऊँचा और १/२ गाउ चौड़ा सुन्दर ४ द्वारोंवाली पद्मवरवेदिका से घिरा हुआ है। (१३७)

तं मज्झे अडवित्थर-चउच्चमणिपीढिआइ जंबुतरु ।
मूले कंदे खंधे, वरवयरारिट्ठवेरुलिए ॥१३८॥
तस्स य साहपसाहा, दला य बिंटा य पल्लवा कमसो ।
सोवण्णजायरूवा, वेरुलितवणिज्जजंबुणया ॥१३९॥
सो रययमयपवालो, राययविडिमो य रयणपुप्फफलो ।
कोसदुगं उव्वेहे, थुडसाहाविडिमविक्खंभो ॥१४०॥

अर्थ:- उस पीठ के मध्य भाग में ८ योजन विस्तारवाली और ४ योजन ऊँची मणिपीठिका के ऊपर जामुन का वृक्ष है। उसकी जड़, कंद

और स्कंध सुन्दर वज्ररत्न, अरिष्टरत्न और वैडूर्यरत्न के हैं। उसकी शाखा-प्रशाखा, पत्ते, डंठल और नव पल्लव क्रमशः सुवर्णमय, जातरूपमय, वैडूर्यमय, तपनीयमय और जांबूनदमय हैं। उसके प्रवाल रजतमय है, विडिमा (ऊपर की शाखाएँ) रजतमय हैं, पुष्प-फल रत्न के हैं। वह दो गाउ गहरा है। उसका थड, शाखा और विडिमा (बीच की ऊँची शाखा) की चौड़ाई दो गाउ है। (१३८-१४०)

थुडसाहविडिमदीह-त्ति गाउए अट्ठपणरचउवीसं ।
साहा सिरिसमभवणा, तम्माणसचेइअं विडिमं ॥१४१॥

अर्थः- उसके थड, शाखा और विडिमा की लम्बाई क्रमशः ८, १५, २४ गाउ है। शाखा श्रीदेवी के भवन जैसे भवनवाली है। इतने प्रमाणवाली चैत्यवाली विडिमा है। (१४१)

पुव्विल्ल सिज्ज तिसु आ-सणाणि भवणेसु णाढिअसुरस्स ।
सा जंबू बारसवे-इआहि कमसो परिक्खित्ता ॥१४२॥

अर्थः- पूर्वदिशा के भवन में अनादृतदेव की शय्या है और शेष तीन भवनों में उसके आसन है। वह जांबूवृक्ष क्रमशः १२ वेदिकाओं से घिरा हुआ है। (१४२)

दहपउमाणं जं वित्थरं तु तमिहावि जंबुरुक्खाणं ।
नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहिसीओ ॥१४३॥

अर्थः-द्रह के कमलों का जो विस्तार कहा गया है, वह यहाँ भी जंबूवृक्षों का है, परन्तु महत्तरिकाओं के स्थान पर यहाँ अग्रमहिषियाँ हैं। (१४३)

कोसदुसएहिं जंबू, चउद्दिसिं पुव्वसालसमभवणा ।
विदिसासु सेसतिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥१४४॥

अर्थः- जंबूवृक्ष की चारों दिशाओं में २०० गाउ दूर पूर्वशाखा के भवन जैसे भवन हैं, विदिशाओं में शेष ३ शाखा के भवनों के समान ४ वावडीवाले प्रासाद हैं। (१४४)

ताणंतरेसु अड जिण-कूडा तह सुरकुराइ अवरद्धे ।
राययपीढे सामालि-रुक्खो एमेव गरुलस्स ॥१४५॥

अर्थः- उसके अन्तर में ८ जिनकूट हैं तथा देवकुरु के पश्चिमार्ध में रजत की पीठ पर इसी प्रकार गरुडदेव का शाल्मलीवृक्ष है। (१४५)

बत्तीस सोल बारस, विजया वक्खार अंतरणईओ ।
मेरुवणाओ पुव्वा-वरासु कुलगिरिमहणयंता ॥१४६॥

अर्थः-मेरुपर्वत के वन से पूर्व-पश्चिम में कुलगिरि और महानदी के अन्तवाले ३२, १६, १२ विजय, वक्षस्कारपर्वत और अन्तरनदियाँ हैं। (१४६)

विजयाण पिहुत्ति सग-ट्ठभाग बारुत्तरा दुवीससया ।
सेलाणं पंचसए, सवेइणइ पन्नवीससयं ॥१४७॥

अर्थः- विजयों की चौड़ाई २,२१२ ७/८ योजन है, पर्वतों की चौड़ाई ५०० योजन है, अन्तरनदी की चौड़ाई १२५ योजन है। (१४७)

सोलससहस्स पणसय, बाणउआ तह य दो कलाओ य ।
एएसिं सव्वेसिं, आयामो वणमुहाणं च ॥१४८॥

अर्थः- इन सबकी और वनमुखों की लम्बाई १६,५९२ योजन और दो कला है। (१४८)

गयदंतगिरिव्वुच्चा, वक्खारा ताणमंतरणईणं ।
विजयाणं चभिहाणा-इं मालवंता पयाहिणओ ॥१४९॥

अर्थः- गजदंतपर्वतों के समान ही वक्षस्कारपर्वत ऊँचे हैं। उनकी अंतरनदियों के और विजयों के नाम माल्यवंत पर्वत से प्रदक्षिणा क्रम में (इस प्रकार है) (१४९)

चित्ते१ य बंभकूडे२, णलिणीकूडे३ य एगसेले४ य ।
तिउडे५ वेसमणे६ वि य, अंजण७ मायंजणे८ चेव ॥१५०॥
अंकावइ९ पम्हावइ१०, आसीविस११ तह सुहावहे१२ चंदे१३ ।
सूरे१४ णागे१५ देवे१६, सोलस वक्खारगिरिणामा ॥१५१॥

अर्थ:- चित्र, ब्रह्मकूट, नलिनीकूट, एकशैल, त्रिकूट, वैश्रमण, अंजन, मातंजन, अंकापाती, पक्ष्मापाती, आशीविष, सुखावह, चंद्र, सूर, नाग, देव - ये १६ वक्षस्कार पर्वतों के नाम हैं। (१५०, १५१)

गाहावई १ दहवई २, वेगवई ३ तत्त ४ मत्त ५ उम्मत्ता ६ ।
खीरोय ७ सीयसोया ८, तह अंतोवाहिणी ९ चेव ॥१५२॥
उम्मीमालिणि १० गंभीरमालिणी ११ फेणमालिणी १२ चेव ।
सव्वत्थ वि दसजोयण-उंडा कुंडुब्भवा एया ॥१५३॥

अर्थ:- गाहावती, द्रहवती, वेगवती, तप्ता, मत्ता, उन्मत्ता, क्षीरोदा, शीतस्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्मिमालिनी, गंभीरमालिनी, फेनमालिनी, (ये १२ अंतरनदियों के नाम हैं) ये अंतरनदियाँ कुंड में से उत्पन्न हुई है और ये सभी १० योजन गहरी हैं। (१५२-१५३)

कच्छु१ सुकच्छो२ य, महा-कच्छो३ कच्छावई४ तहा ।
आवत्तो५ मंगलावत्तो६, पुक्खलो७ पुक्खलावाई८ ॥१५४॥
वच्छु९ सुवच्छो१० य, महा-वच्छो११ वच्छावई१२ वि य ।
रम्मो१३ य रम्मओ१४ चेव, रमणी१५ मंगलावई१६ ॥१५५॥
पम्हु१७ सुपम्हो१८ य, महा-पम्हो१९ पम्हावई२० तओ ।
संखो२१ णलिणणामा२२ य, कुमुओ२३ णलिणावई२४ ॥१५६॥
वप्पु२५ सुवप्पो२६ अ, महा-वप्पो२७ वप्पावई२८ त्ति य ।
वग्गू२९ तहा सुवग्गू३० य, गंधिलो३१ गंधिलावई३२ ॥१५७॥

अर्थ:-कच्छ, सुकच्छ, महाकच्छ, कच्छावती, आवर्त, मंगलावर्त, पुष्कल, पुष्कलावती, वत्स, सुवत्स, महावत्स, वत्सावती, रम्य, रम्यक्, रमणीय, मंगलावती, पक्ष्म, सुपक्ष्म, महापक्ष्म, पक्ष्मावती, शंख, नलिन, कुमुद, नलिनावती, वप्र, सुवप्र, महावप्र, वप्रावती, वल्गु, सुवल्गु, गंधिल, गंधिलावती (ये ३२ विजयों के नाम हैं।) (१५४-१५७)

एए पुव्वावरगय-विअड्ढदलिय त्ति णइदिसिदलेसु ।
भरहद्धपुरिसमाओ, इमेहिं णामेहिं णयरीओ ॥१५८॥

अर्थ:-ये विजय पूर्व से पश्चिम लम्बे वैताढ्यपर्वत से दो भागों में किए गए हैं। नदी की दिशा के अर्ध भाग में भरतार्ध की नगरी के समान, इन नामोंवाली नगरियाँ हैं। (१५८)

खेमा१ खेमपुरा२ वि अ, अरिट्ठ३ रिट्ठावई४ य णायव्वा ।
खग्गी५ मंजूसा६ वि य, ओसहिपुरि७ पुंडरिगिणी८ य ॥१५९॥
सुसीमा९ कुंडला१० चेव, अवराईअ११ पहंकरा१२ ।
अंकवइ१३ पम्हावई१४, सुभा१५ रयणसंचया१६ ॥१६०॥
आसपुरा१७ सीहपुरा१८, महापुरा१९ चेव हवइ विजयपुरा२० ।
अवराइया२१ य अवरा२२,
असोगा२३ तह वीअसोगा२४ य ॥१६१॥
विजया२५ य वेजयंती२६,
जयंति२७ अपराजिया२८ य बोधव्वा ।
चक्कपुरा२९ खग्गपुरा३०,
होइ अवज्झा३१ अउज्झा३२ य ॥१६२॥

अर्थ:-क्षेमा, क्षेमपुरा, अरिष्ट, रिष्टावती, खड्गी, मंजूषा, औषधिपुरी, पुंडरिगिणी, सुसीमा, कुंडला, अपराजित, प्रभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया, अश्वपुरा, सिंहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अपराजिता, अपरा, अशोका, वीतशोका, विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिता. चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवध्या और अयोध्या। (१५९-१६२)

कुंडुब्भवा उ गंगा-सिंधूओ कच्छपम्हपमुहेसु ।
अट्ठट्ठसु विजएसुं, सेसेसु य रत्तरत्तवई ॥१६३॥

अर्थ:- कच्छ आदि तथा पक्ष्म आदि ८-८ विजयों में कुंड में से उत्पन्न गंगा-सिंधु नदियाँ हैं। शेष विजयों में रक्ता-रक्तवती नदियाँ हैं। (१६३)

अविवक्खिऊण जगई, सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं ।
गुणतीससय दुवीसा, णइंति गिरिअंति एगकला ॥१६४॥

अर्थः- जगती की विवक्षा न करते हुए वेदिका सहित चार वनमुखों की चौड़ाई नदी की तरफ २,९२२ योजन है और पर्वत की तरफ १ कला है । (१६४)

पणतीस सहस चउ सय, छडुत्तरा सयलविजयविक्खंभो ।
वणमुहदुगविक्खंभो, अडवण्ण सया य चोयाला ॥१६५॥
सग सय पण्णासा णइ-पिहुत्ति चउवण्ण सहस मेरुवणे ।
गिरिवित्थरि चउ सहसा, सव्वसमासो हवइ लक्खं ॥१६६॥

अर्थः- सारे (एक तरफ के १६) विजयों की चौड़ाई ३५,४०६ योजन है । दो वनमुखों की चौड़ाई ५,८४४ योजन है । नदियों की चौड़ाई ७५० योजन है । मेरुपर्वत और वन की चौड़ाई ५४,००० योजन है । पर्वतों की चौड़ाई ४,००० योजन है । कुल मिलाकर १ लाख योजन है ।

जोअणसयदसगंते, समधरणीओ अहो अहोगामा ।
बायालीससहसेहिं, गंतुं मेरुस्स पच्छिमओ ॥१६७॥

अर्थः- मेरुपर्वत से पश्चिम में ४२,००० योजन जाकर समपृथ्वी से नीचे १,००० योजन के अन्त में अधोग्राम है । (१६७)

चउ चउतीसं च जिणा, जहण्णमुक्कोसओ अ हुंति कमा ।
हरिचक्किबला चउरो, तीसं पत्तेअमिह दीवे ॥१६८॥

अर्थः- इस जंबूद्वीप में जघन्य से और उत्कृष्ट से क्रमशः ४ और ३४ तीर्थंकर तथा वासुदेव-चक्रवर्ती-बलदेव प्रत्येक ४ और ३० होते हैं । (१६८)

ससिदुगरविदुगचारो, इह दीवे तेसि चारखित्तं तु ।
पण सय दसुत्तराइं, इगसट्ठिहाया (भागा) य अडयाला ॥१६९॥

अर्थः- इस जंबूद्वीप में दो चन्द्र और दो सूर्य विचरण करते हैं । उनके विचरण का क्षेत्र ५१० ४८/६१ योजन है । (१६९)

पणरस चुलसीइसयं, छप्पण्णडयालभागमाणाइं ।
ससिसूरमंडलाइं, तयंतराणिगिगहीणाइं ॥१७०॥

अर्थः- चन्द्र और सूर्य के ५६/६१ योजन और ४८/६१ योजन मानवाले क्रमशः १५ और १८४ मंडल हैं । उनके अन्तर एक-एक कम हैं । (१७०)

पणतीसजोअणे भाग-तीस चउरो अ भाग सगहा(भा)या ।
अंतरमाणं ससिणो, रविणो पुण जोअणे दुण्णि ॥१७१॥

अर्थः- चन्द्र के मंडलों का अन्तर ३५ ३०/६१ ४/७ योजन है, सूर्य के मंडलों का अन्तर २ योजन है । (१७१)

दीवंतो असिअसए, पण पणसट्ठी अ मंडला तेसिं ।
तीसहिअतिसय लवणे, दसिगुणवीसं सयं कमसो ॥१७२॥

अर्थः- उनके (चन्द्र और सूर्य के) जंबूद्वीप में १८० योजन में क्रमशः ५ और ६५ मंडल हैं तथा लवणसमुद्र में ३३० योजन में क्रमशः १० और ११९ मंडल हैं । (१७२)

ससिससिरविरवि अंतरि, मज्झे इगलक्खु तिसय साहूणो ।
साहिअदुसयरिपणचइ-बहि लक्खो छसय साठहिओ ॥१७३॥

अर्थः- चन्द्र-चन्द्र और सूर्य-सूर्य का अन्तर सर्व अभ्यंतर मंडल में १ लाख योजन में ३६० योजन न्यून है । उसके बाद साधिक ७२ योजन और साधिक ५ योजन की वृद्धि होती है । सर्व बाह्यमंडल में अन्तर ६६० योजन अधिक १ लाख योजन है । (१७३)

साहिअ पणसहस तिहुत्तराइं, ससिणो मुहुत्तगइ मज्झे ।
बावण्णहिआ सा बहि, पइमंडल पउणचउवुड्ढी ॥१७४॥

अर्थः- सर्व अभ्यंतर मंडल में चन्द्र की मुहूर्त्तगति साधिक ५,०७३ योजन है, सर्व बाह्य मंडल में वह (सा. ५,०७३ योजन) ५२ योजन से अधिक (अर्थात् सा. ५,१२५ योजन) चन्द्र की मुहूर्त्तगति है । प्रत्येक मंडल में (मुहूर्त्तगति में) पौने ४ योजन की वृद्धि होती है । (१७४)

जा ससिणो सा रविणो, अडसयरिसएणसीसएणहिआ ।
किंचूणाण अट्ठार-सट्ठिहायाणमिह वुड्ढी ॥१७५॥

अर्थः- जो चन्द्र की मुहूर्तगति है वह १७८ योजन और १८० योजन से अधिक (अर्थात् सर्व अभ्यंतर मंडल में सा. ५२५१ योजन और सर्वबाह्य मंडल में सा. ५३०५ योजन) सूर्य की मुहूर्तगति है। यहाँ कुछ न्यून १८/६० भाग की वृद्धि है। (१७५)

मज्झे उदयत्थंतरि, चउणवइसहस पणसय छवीसा ।
बायाल सट्ठिभागा, दिणं च अट्ठारसमुहुत्तं ॥१७६॥

अर्थः- सर्व अभ्यंर मंडल में सूर्य के उदय-अस्त का अन्तर ९४,५२६ ४२/६० योजन है और दिन १८ मुहूर्त का है। (१७६)

पइमंडल दिणहाणी दुण्ह मुहुत्तेगसट्ठिभागाणं ।
अंते बारमुहुत्तं, दिणं णिसा तस्स विवरीआ ॥१७७॥

अर्थः-प्रत्येक मंडल में २/६१ मुहूर्त की दिनहानि होती है। अन्त में (अन्तिम मंडल में) १२ मुहूर्त का दिन और उससे विपरीत (१८ मुहूर्त की) रात्रि है। (१७७)

उदयत्थंतरि बाहिं, सहसा तेसट्ठि छसय तेसट्ठा ।
तह इगससिपरिवारे, रिक्खडवीसाडसीइ गहा ॥१७८॥
छासट्ठि सहस णवसय, पणहत्तरि तारकोडिकोडीणं ।
सण्णंतरेण वुस्सेहंगुलमाणेण वा हुंति ॥१७९॥

अर्थः- सर्व बाह्यमंडल में सूर्य के उदय-अस्त का अन्तर ६३,६६३ योजन है। तथा एक चन्द्र-परिवार में २८ नक्षत्र, ८८ ग्रह और ६६,९७५ कोडाकोडी तारे दूसरे नाम से (कोडाकोडी करोड़ का दूसरा नाम मानकर) अथवा उत्सेधांगुल के माप से होते हैं। (१७८-१७९)

गहरिक्खतारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काउं ।
इच्छियदीवुदहिंमि य, गहाइमाणं विआणेह ॥१८०॥

अर्थः- ग्रह-नक्षत्र-तारा की संख्या को चन्द्र की संख्या से गुणा करके इच्छित द्वीप-समुद्र में ग्रह आदि का प्रमाण जानना चाहिए। (१८०)

चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धायइम्मि ससिसूरा ।
परओदहिदीवेसु अ, तिगुणा पुव्विल्लसंजुत्ता ॥१८१॥

अर्थः-लवणसमुद्र में और धातकीखंड में ४-४ और १२-१२ चन्द्र-सूर्य हैं। उसके बाद के समुद्रों और द्वीपों में (पूर्व के द्वीप-समुद्र के चन्द्र-सूर्य को) तीन गुणा करके उसके पूर्व के द्वीप-समुद्र के चन्द्र-सूर्य को जोड़कर इतने चन्द्र-सूर्य हैं। (१८१)

णरखित्तं जा समसेणिचारिणो सिग्घसिग्घतरगइणो ।
दिट्ठिपहमिंति खित्ताणुमाणओ ते णराणेवं ॥१८२॥

अर्थः- जहाँ तक मनुष्यक्षेत्र है, वहाँ तक चन्द्र-सूर्य समश्रेणी में विचरण करनेवाले और शीघ्र-अतिशीघ्र गतिवाले हैं। वह (चन्द्र-सूर्य) क्षेत्र के अनुसार इस प्रकार मनुष्यों के दृष्टिमार्ग में आते हैं। (१८२)

पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्खइगवीसा ।
पुक्खरदीवड्ढणरा, पुव्वेण अवरेण पिच्छंति ॥१८३॥

अर्थः-पुष्करद्वीपार्ध के मनुष्य पूर्व में और पश्चिम में २१,३४,५३७ योजन पर स्थित सूर्य को देखते है। (१८३)

णरखित्तबहिं ससिरवि-संखा करणंतरेहिं वा होई ।
तह तत्थ य जोइसिया, अचलद्धपमाण सुविमाणा ॥१८४॥

अर्थः- मनुष्यक्षेत्र के बाहर चन्द्र-सूर्य की संख्या (ऊपर के करण से) अथवा अन्य करणों से होती हैं और वहाँ ज्योतिष के सुन्दर विमान स्थिर हैं और अर्धप्रमाणवाले हैं। (१८४)

इह परिहि तिलक्खा, सोलसहस्स सयदुण्णि पउणअडवीसा ।
धणुहडवीससयंगुल-तेरससड्ढा समहिआ य ॥१८५॥

अर्थः- यहाँ (जंबूद्वीप की) परिधि ३,१६,२२७ ३/४ योजन १२८ धनुष्य १३ १/२ अंगुल और अधिक है। (१८५)

सगसयणऊआकोडी, लक्खा छप्पण्ण चउणवईसहस्सा।
सड्ढसयं पउणदुकोस, सड्ढबासट्ठिकर गणिअं ॥१८६॥

अर्थः- ७९०,५६,९४ १५० योजन १ ३/४ गाउ ६२ १/२ हाथ जंबूद्वीप का क्षेत्रफल है। (१८६)

वट्टपरिहिं च गणिअं, अंतिमखंडाइ उसु जिअं च धणुं।
बाहुं पयरं च घणं, गणेह एएहिं करणेहिं ॥१८७॥

अर्थः- वर्तुल की परिधि-क्षेत्रफल, अन्त में स्थित खंडों के इषु, जीवा, धनुःपृष्ठ, बाहा, प्रतरगणित और घनगणित इन करणों से गिनती करें। (१८७)

विक्खंभवग्गदहगुण-मूलं वट्टस्स परिरओ होई।
विक्खंभपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणिअपयं ॥१८८॥

अर्थः- चौड़ाई के वर्ग को १०से गुणा कर उसका वर्गमूल वर्तुल की परिधि है। चौड़ाई के चौथे भाग से गुण की गई परिधि उसका (वर्तुल का) क्षेत्रफल है। (१८८)

ओगाहु उसू सुच्चिअ, गुणवीसगुणो कलाउसू होई।
विउसुपिहुत्ते चउगुण-उसुगुणिए मूलमिह जीवा ॥१८९॥

अर्थः- अवगाह ही ईषु है। उसे १९ से गुणा करें तो कलाईषु होता है। (वर्तुल की चौड़ाई में से) इषु की चौड़ाई को बाद करके उसे ४ गुणा इषु से गुणा करके उसका वर्गमूल निकालें, वे यहाँ जीवा हैं। (१८९)

इसुवग्गि छगुणि जीवा-वग्गजुए मूल होई धणुपिट्ठं।
धणुदुगविसेससेसं, दलिअं बाहादुगं होई ॥१९०॥

अर्थः-इषु के वर्ग को ६ से गुणा कर, उसमें जीवा का वर्ग जोडकर उसका वर्गमूल निकाला जाए, वह धनुःपृष्ठ है। दो धनुःपृष्टों का विश्लेष करके शेष का अर्ध, दो बाहा हैं। (१९०)

अंतिमखंडस्सुसुणा, जीवं संगुणिअ चउहिं भईऊणं।
लद्धंमि वग्गिए दस-गुणम्मि मूलं हवइ पयरो ॥१९१॥

अर्थः- अन्तिम खंड के इषु से जीवा को गुणा कर, ४ से भाग देकर जो मिलता है, उसका वर्ग करके १० से गुणा कर उसका वर्गमूल निकालें, वह प्रतर (क्षेत्रफल) है। (१९१)

जीवावग्गाण दुगे, मिलिए दलिए अ होई जं मूलं।
वेअड्ढाईण तयं, सपिहुत्तगुणं भवे पयरो ॥१९२॥

अर्थः- दो जीवाओं के वर्ग को जोड़कर उसका आधा करके उसका जो वर्गमूल, वह चौड़ाई से गुणा किया गया वैताढ्यपर्वत का आदि का प्रतर (क्षेत्रफल) है। (१९२)

एयं च पयरगणिअं, संववहारेण दंसिअं तेण।
किंचूणं होई फलं, अहिअं पि हवे सुहमगणणा ॥१९३॥

अर्थः- यह प्रतरगणित व्यवहार से बतलाया गया है। अतः उसका फल (परिणाम) कुछ कम है। सूक्ष्म रूप से गिनती करने से अधिक भी होता है। (१९३)

पयरो सोस्सेहगुणो, होई घणो परिरयाई सव्वं वा।
करणगणणालसेहिं, जंतगलिहिआउ दट्ठव्वं ॥१९४॥

अर्थः- ऊँचाई से गुणा किया गया प्रतर घन है। अथवा परिधि आदि सारे करण गिनने में आलसी मनुष्यों को यन्त्र में लिखे हुए में देख लेना चाहिए। (१९४)

• • •

जीव की संग्रहगाथा

जोअणसहस्सणवगं, सत्तेव सया हवंति अडयाला ।
बारस कला य सकला, दाहिणभरहद्धजीवाओ ॥१॥

अर्थः-९,७४८ योजन और सम्पूर्ण १२ कला, यह दक्षिण भरतार्धक्षेत्र की जीवा है। (१)

दस चेव सहस्साइं, जीवा सत्त य सयाइं वीसाइं ।
बारस य कला ऊणा, वेअड्ढगिरिस्स विण्णेआ ॥२॥

अर्थः-१०,७२० योजन और न्यून १२ कला, यह वैताढ्य पर्वत की जीवा जानें। (२)

चउदस य सहस्साइं, सयाइं चत्तारि एगसयराइं ।
भरहद्धुत्तरजीवा, छच्च कला ऊणिआ किंचि ॥३॥

अर्थः-१४,४७१ योजन और किंचित् न्यून ६ कला, यह उत्तर भरतार्धक्षेत्र की जीवा है। (३)

चउवीस सहस्साइं, णव सए जोअणाण बत्तीसे ।
चुल्लहिमवंतजीवा, आयामेणं कलद्धं च ॥४॥

अर्थः-२४,९३२ योजन और १/२ कला लम्बाई से लघु, यह हिमवंत पर्वत की जीवा है। (४)

सत्तत्तीस सहस्सा, छच्च सया जोअणाण चउसयरा ।
हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥५॥

अर्थः-३७,७६४ योजन और किंचित् न्यून १६कला, यह हिमवंतक्षेत्र की जीवा है। (५)

तेवण्ण सहस्साइं, णव य सया जोअणाण इगतीसा ।
जीवा य महाहिमवे, अद्ध कला छक्कलाओ अ ॥६॥

अर्थः-५३,९३१ योजन और ६ १/२ कला, यह महाहिमवंत पर्वत की जीवा है। (६)

एगुत्तरा णव सया, तेवत्तरिमेव जोअणसहस्सा ।
जीवा सत्तरस कला, अद्धकला चेव हरिवासे ॥७॥

अर्थः-७३,९०१ योजन और १७ १/२ कला, यह हरिवर्ष की जीवा है। (७)

चउणवइ सहस्साइं, छप्पण्णहियं सयं कला दो य ।
जीवा णिसहस्सेसा, लक्खं जीवा विदेहद्धे ॥८॥

अर्थः- ९४,१५६ योजन और २ कला, यह निषध पर्वत की जीवा है। अर्धमहाविदेहक्षेत्र की जीवा १ लाख योजन है। (८)

• • •

धनु:पृष्ठ - बाहा की संग्रहगाथा

णव चेव सहस्साइं, छावट्ठाह सयाइं सत्तेव ।
सविसेस कला चेगा, दाहिणभरहद्ध धणुपीठं ॥१॥

अर्थ:-९,७६६ योजन और साधिक १ कला, यह दक्षिणभरतार्ध का धनु:पृष्ठ है । (१)

दस चेव सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति तेआला ।
धणुपिट्ठं वेअड्ढे, कला य पण्णरस हवंति ॥२॥

अर्थ:-१०,७४३ योजन और १५ कला यह वैताढ्यपर्वत का धनु:पृष्ठ है । (२)

सोलस चेव कलाओ, अहिआओ हुंति अद्धभागेणं ।
बाहा वेअड्ढस्स उ, अट्ठासीआ सया चउरो ॥३॥

अर्थ:-४८८ योजन और १६ १/२ कला, यह वैताढ्यपर्वत की बाहा है । (३)

चउदस य सहस्साइं, पंचेव सयाइं अडवीसा ।
एक्कारस य कलाओ, धणुपिट्ठं उत्तरद्धस्स ॥४॥

अर्थ:-१४,५२८ योजन और ११कला, यह उत्तरभरतार्धक्षेत्र का धनु:पृष्ठ है । (४)

भरहद्धुत्तरबाहा, अट्ठारस हुंति जोअणसयाइं ।
बाणऊअ जोअणाणि अ, अद्धकला सत्त य कलाओ ॥५॥

अर्थ:-१,८९२ योजन और ७ १/२ कला, यह उत्तरभरतार्धक्षेत्र की बाहा है । (५)

धणु हिमवे कलचउरो, पणवीस सहस्स दुसय तीसहिआ ।
बाहा सोलद्ध कला, तेवण्ण सया य पण्णहिआ ॥६॥

अर्थ:-हिमवंतपर्वत का धनु:पृष्ठ २५,२३० योजन और ४ कला है, बाहा ५,३५० योजन और १६ १/२ कला है । (६)

अडतीस सहस सग सय, चत्ता धणु दस कला य हेमवए ।
बाहा सत्तट्ठि सए, पणपण्णे तिण्णि अ कलाओ ॥७॥

अर्थ:-हिमवंतक्षेत्र का धनु:पृष्ठ ३८,७४० योजन और १० कला है, बाहा ६,७५५ योजन और ३ कला है । (७)

धणु महहिमवे दसकल, दो सय तेणउअ सहस सगवण्णा ।
बाहा बाणउअसए, छहत्तरे णव कलद्धं च ॥८॥

अर्थ:-महाहिमवंत पर्वत का धनु:पृष्ठ ५७,२९३ योजन और १० कला है, बाहा ९,२७६ योजन और ९ १/२ कला है । (८)

चुलसी सहसा सोलस, धणु हरिवासे कलाचउक्कं च ।
बाहा तेर सहस्सा, तिण्णिगसट्ठा छ कल सद्धा ॥९॥

अर्थ:-हरिवर्षक्षेत्र का धनु:पृष्ठ ८४,०१६ योजन और ४ कला है, बाहा १३,३६१ योजन और ६ १/२ कला है । (९)

णिसह धणु णव कला लक्ख, सहस चउवीस तिसय छायाला ।
बाहा पण्णट्ठि सयं, सहस्स वीसं दुकल अद्धं ॥१०॥

अर्थ:-निषधपर्वत का धनु:पृष्ठ १,२४,३४६ योजन और ९ कला है, बाहा २०,१६५ योजन और २ १/२ कला है । (१०)

सोलस सहस अड सय, तेसीआ सड्ढ तेरस कला य ।
बाहा विदेहमज्झे, धणुपिट्ठं परिरयस्सद्धं ॥११॥

अर्थ:- महाविदेहक्षेत्र के मध्य में बाहा १६,८८३ योजन और १३ १/२ कला है, धनु:पृष्ठ परिधि से आधा है । (११)

• • •

प्रतरगणित की संग्रहगाथा

लक्खट्ठारस पणतीस, सहस्स चउ सया य पणसीया ।
बारस कला छ विकला, दाहिणभरहद्धपरं तु ॥१॥

अर्थः-१८,३५,४८५ योजन, १२ कला, ६ विकला, यह दक्षिणभरतार्ध क्षेत्र का प्रतर (क्षेत्रफल) है । (१)

सत्तहिया तिण्णि सया, बारस य सहस्स पंच लक्खा य ।
बारस य कला पयरं, वेअड्ढगिरिस्स धरणितले ॥२॥

अर्थः-५,१२,३०७ योजन १२ कला, यह वैताढ्यपर्वत के पृथ्वीतल के ऊपर का प्रतर है। (२)

जोअण तीसं वासे, पढमाए मेहलाए पयरमिमं ।
लक्खतिग तिसयरि सया, चुलसी इक्कारस कलाओ ॥३॥

अर्थः-३० योजन चौड़ी पहेली मेखला का प्रतर इस प्रकार है - ३,०७,३८४ योजन ११ कला है। (३)

दस जोअण विक्खंभे, बीआए मेहलाइ पयरमिमं ।
लक्खो चउवीस सया, इगसट्ठा दस कलाओ अ ॥४॥

अर्थः-१० योजन चौड़ी दूसरी मेखला का प्रतर इस प्रकार है - १,०२,४६१ योजन १०कला । (४)

अट्ठ सया अडसीआ, सहसा बत्तीस तीस लक्खा य ।
कल बार विकलिगारस, उत्तरभरहद्धपयरमिमं ॥५॥

अर्थः-३०,३२,८८८ योजन, १२ कला, ११ विकला - यह उत्तरभरतार्धक्षेत्र का प्रतर है। (५)

दो कोडि चउद लक्खा, सहसा छप्पन्न णवसय इगसयरा ।
अट्ठ कला दस विकला, पयरमिमं चुल्लहिमवंते ॥६॥

अर्थः-२,१४,५६,९७१ योजन, ८ कला, १० विकला - यह लघुहिमवंतपर्वत का प्रतर है। (६)

हेमवए छक्कोडी, बावत्तरि लक्ख सहस तेवण्णा ।
पणयाल सयं पयरो, पंच कला अट्ठ विकला य ॥७॥

अर्थः-हिमवंतक्षेत्र का प्रतर ६,७२,५३,१४५ योजन, ५ कला, ८ विकला है। (७)

गुणवीस कोडि अडवण्ण-लक्ख अडसट्ठि सहस सयमेगं ।
छल (छा) सीअं दस य कला, पण विकला पयर महहिमवे ॥८॥

अर्थः-१९,५८,२८,१८६ योजन, १० कला, ५ विकला यह महाहिमवंतपर्वत का प्रतर है। (८)

चउपण्णं कोडीओ, लक्खा सीआल तिसयरि सहस्सा ।
अट्ठ सयं सयरि सत्त य, कलाओ पयरं तु हरिवासे ॥९॥

अर्थः-५४,४७,७३,८७० योजन, ७ कला - यह हरिवर्षक्षेत्र का प्रतर है। (९)

बायालं कोडिसयं, लक्खा चउपण्ण सहस छासट्ठी ।
पण सय गुणहत्तरि कल, अढार णिसहस्स पयरमिमं ॥१०॥

अर्थः-१,४२,५४,६६,५६९ योजन, १८ कला - यह निषधपर्वत का प्रतर है। (१०)

तेसट्ठं कोडिसयं, लक्खा सगवण्ण सहस गुणयाला ।
ति सय दुउत्तर दस कल पणरस विकला विदेहद्धे ॥११॥

अर्थः- १,६३,५७,३९,३०२ योजन, १० कला, १५ विकला - यह महाविदेहार्धक्षेत्र का प्रतर है। (८)

• • •

घनगणित की संग्रहगाथा

दसजोअणुस्सए पुण, तेवीस सहस्स लक्ख इगवण्णा ।

जोअण छावत्तरि छ, कला य वेअड्ढघणगणिअं ॥१॥

अर्थ:-१० योजन की ऊँचाई में वैताढ्यपर्वत का घनगणित ५१,२३,०७६ योजन ६ कला है। (१)

अट्ठ सया पणयाला, तीसं लक्खा तिहुत्तरि सहस्सा ।

पणरस कला य घणो, दसुस्सए होइ बीअम्मि ॥२॥

अर्थ:-अन्य १० योजन की ऊँचाई में वैताढ्यपर्वत का घनगणित ३०,७३,८४५ योजन १५ कला है। (२)

सत्तहिआ तिण्णि सया, बारस य सहस्स पंच लक्खा य ।

अवरा य बारस कला, पणुस्सए होइ घणगणिअं ॥३॥

अर्थ:-५ योजन ऊँचाई में वैताढ्यपर्वत का घनगणित ५,१२,३०७ योजन और दूसरी १२ कला है। (३)

सत्तासीइ लक्खा, उणतीसहिया य बिनवइ सयाइं ।

ऊणावीसइ भागा, चउदस वेअड्ढसयलघणं ॥४॥

अर्थ:-वैताढ्यपर्वत का सम्पूर्ण घनगणित ८७,०९,२२९ १४/१९ योजनहै। (४)

हिमवंति दुसय चउदस, कोडी छप्पण्ण लक्ख सगणउई ।

सहसा चउआलसयं, सोल कला बार विकल घणं ॥५॥

अर्थ:-हिमवंतपर्वत का घनगणित २,१४,५६,९७,१४४ योजन १६ कला और १२ विकला है। (५)

गुणयाल सया सतरस, कोडी छत्तीस लक्ख सगतीसा ।

सहसा तिसय अडुत्तर, बार विकल घणं महाहिमवे ॥६॥

अर्थ:- महाहिमवंतपर्वत का घनगणित ३९,१७,३६,३७,३०८ योजन १२ कला है। (६)

सगवण्ण सहस अट्ठार, कोडि छासट्ठि लक्ख सगवीसं ।

सहसा णव सय, एगूणसीइ णिसहस्स घणगणिअं ॥७॥

अर्थ:- निषधपर्वत का घनगणित ५,७०,१८,६६,२७,९७९ योजन है। (७)

जंबूद्वीप अधिकार समाप्त

• • •

लवणसमुद्र अधिकार

गोतित्थं लवणोभय, जोअण पणनवइसहस जा तत्थ ।
समभूतलाओ सगसय-जलवुड्ढी सहसमोगाहो ॥१९५॥ (१)

अर्थः-लवणसमुद्र की दोनों ओर ९५,००० योजन तक गोतीर्थ है। वहाँ समतल भूमि से ७०० योजन जलवृद्धि है और १,००० योजन गहराई है। (१९५) (१)

तेरासिएण मज्झिल्ल-रासिणा सगुणिज्ज अंतिमगं ।
तं पढमरासिभइअं, उव्वेहं मुणसु लवणजले ॥१९६॥ (२)

अर्थः- त्रिराशि से मध्यराशि के द्वारा अन्तिमराशि को गुणा करके, उस पहली राशि से विभाजित लवणसमुद्र के जल की ऊँचाई जानें। (१९६) (२)

हिट्ठुवरि सहसदसगं, पिहुला मूलाउ सतरसहस्सुच्चा ।
लवणिसिहा सा तदुवरि, गाउदुगं वड्ढइ दुवेलं ॥१९७॥ (३)

अर्थः-नीचे-ऊपर १०,००० योजन चौड़ी, मूल से १७,००० योजन ऊँची लवणशिखा है। उसके ऊपर दो बार दो गाउ पानी बढ़ता है। (१९७) (३)

बहुमज्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा ।
जोअणसहस्स जड्डा, तद्दसगुण हिट्ठुवरि रुंदा ॥१९८॥ (४)
लक्खं च मज्झि पिहुला, जोअणलक्खं च भूमिमोगाढा ।
पुव्वाइसु वडवामुह-केजुवजूवेसरभिहाणा ॥१९९॥ (५)

अर्थः-लवणसमुद्र के बिल्कुल मध्य में ४ दिशाओं में वज्र के कलश के आकार के ४ पातालकलश हैं। वे १,००० योजन मोटे, उससे १० गुणा नीचे-ऊपर चौड़ा, मध्य में १ लाख योजन चौड़ा, १ लाख योजन भूमि में अवगाढ़ और पूर्व आदि दिशाओं में वडवामुख, केयूप, यूप, ईश्वर नामक हैं। (१९८-१९९) (४-५)

अण्णे लहुपायाला, सग सहसा अड सया सचुलसीआ ।
पुव्वुत्तसयंसपमाणा, तत्थ तत्थ प्पएसेसु ॥२००॥

अर्थः-उन उन प्रदेशों में पूर्व में कथित पातालकलशों से १००वें भाग के प्रमाणवाले अन्य ७,८८४ लघु पातालकलश हैं। (२००) (६)

कालो अ महाकालो, वेलंबपभंजणे अ चउसु सुरा ।
पलिओवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाऊ ॥२०१॥

अर्थः-चार पातालकलशों के अधिष्ठायक १ पल्योपम के आयुष्यवाले काल, महाकाल, वेलंब, प्रभंजन देव हैं। शेष पातालकलशों के अधिष्ठायक उनसे आधे आयुष्यवाले देव हैं। (२०१) (७)

सव्वेसिमहोभागे, वाऊ मज्झिल्लयम्मि जलवाऊ ।
केवलजलमुवरिल्ले, भागदुगे तत्थ सासुव्व ॥२०२॥ (८)
बहवे उदारवाया, मुच्छंति खुहंति दुण्णि वाराओ ।
एगअहोरत्तंतो, तया तया वेलपरिवुड्ढी ॥२०३॥ (९)

अर्थः-सभी पातालकलशों के नीचे के भाग में वायु है, मध्यभाग में जल और वायु है, तथा ऊपर के भाग में मात्र पानी है। उन पातालकलशों के दो भागों में एक अहोरात्र में दो बार श्वास की भांति बहुत से औदारिक वायु उत्पन्न होते हैं। और हलचल मचाते है। तब तब वेलाकी वृद्धि होती है। (२०२,२०३) (८,९)

बायालसट्ठिदुसयरि-सहसा नागाण मज्झुवरिबाहिं ।
वेलं धरंति कमसो, चउहत्तरुलक्खु ते सव्वे ॥२०४॥ (१०)

अर्थः-४२,०००, ६०,०००, ७२,००० नागकुमार देव क्रमशः बीच में, ऊपर और बाहर वेला को धारण करते हैं। वे सभी १,७४,००० हैं। (२०४) (१०)

बायालसहस्सेहिं, पुव्वेसाणाइदिसिविदिसि लवणे ।
वेलंधराणुवेलं-धराइणं गिरिसु वासा ॥२०५॥ (११)

अर्थः-लवणसमुद्र में पूर्व आदि और ईशान आदि दिशा-विदिशा में ४२,००० योजन के बाद पर्वतों के ऊपर वेलंधर और अनुवेलंधर राजाओं के आवास हैं। (२०५) (११)

गोथूभे दगभासे, संखे दगसीम नामि दिसि सेले।
गोथूभो सिवदेवो, संखो अ मणोसिलो राया ॥२०६॥ (१२)
कक्कोडे विज्जुपभे, केलास रुणप्पहे विदिसि सेले।
कक्कोडगु कद्दमओ, केलासरुणप्पहो सामी ॥२०७॥ (१३)

अर्थः- गोस्तूप, दकभास, शंख, दकसीम नामक दिशा के पर्वतों के ऊपर गोस्तूप, शिवदेव, शंख और मणशीलदेव राजा हैं। कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास, अरुणप्रभ नामक विदिशा के पर्वतों के ऊपर कर्कोटक, कर्दमक, कैलास, अरुणप्रभ देव स्वामी हैं। (२०६,२०७) (१२,१३)

एए गिरिणो सव्वे, बावीसहिआ य दससया मूले।
चउसय चउवीसहिआ, वित्थिण्णा हुंति सिहरतले ॥२०८॥ (१४)

अर्थः- ये सभी पर्वत मूल में १,०२२ योजन और शिखरतल पर ४२५ योजन चौड़े हैं। (२०८) (१४)

सतरस सय इगवीसा, उच्चत्ते ते सवेइआ सव्वे।
कणगंकरययफालिह, दिसासु विदिसासु रयणमया ॥२०९॥ (१५)

अर्थः-वेदिका सहित वे सभी पर्वत १,७२१ योजन ऊँचे हैं। दिशा के पर्वत सुवर्ण, अंकरत्न, रजत और स्फटिक के हैं तथा विदिशा के पर्वत रत्नमय हैं। (२०९) (१५)

णव गुणहत्तरि जाअण, बहि जलुवरि चत्त पणणवइभाया।
एए मज्झे णव सय, तेसट्ठा भाव सगसयरि ॥२१०॥ (१६)

अर्थः-ये पर्वत बाहर (जंबूद्वीप की दिशा में) पानी के ऊपर ९६९ ४०/९५ योजन हैं और मध्य में (लवणसमुद्र की शिखा की तरफ) पानी के ऊपर ९६३ ७७/९५ योजन हैं। (२१०) (१६)

हिमवंतंता विदिसी-साणाइगयासु चउसु दाढासु।
सग सग अंतरदीवा, पढमचउक्कं च जगइओ ॥२११॥ (१७)
जोअणतिसएहिं तओ, सयसयवुड्ढी अ छसु चउक्केसु।
अण्णुण्णजगइअंतरि, अंतरसमवित्थरा सव्वे ॥२१२॥ (१८)

अर्थः-हिमवंतपर्वत के छोर से ईशान आदि विदिशा में निकली हुई चार दाढों के ऊपर ७-७ अन्तरद्वीप हैं। पहले चार द्वीप जगती से ३०० योजन पर हैं। बाद के द्वीपों के पारस्परिक अन्तर में और जगती से अन्तर में ६ चतुष्कों में १००-१०० योजन की वृद्धि है। सभी द्वीपों के अन्तर समान चौड़े हैं। (२११-२१२) (१७,१८)

पढमचउक्कुच्च बहिं, अड्ढाइअजोअणे अ वीसंसा।
सयरिंसवुड्ढि परओ, मज्झदिसिं सव्वि कोसदुगं ॥२१३॥ (१९)

अर्थः-पहले चार द्वीप बाहर (जंबूद्वीप की दिशा में) २ १/२ २०/९५ योजन ऊँचे हैं। उसके बाद (प्रत्येक चतुष्क में) ७०/९५ योजन की वृद्धि होती है। मध्यदिशा में (लवणशिखा की दिशा में) सभी द्वीप दो गाउ ऊँचे हैं। (२१३) (१९)

सव्वे सवेइअंता, पढमचउक्कम्मि तेसि नामाइं।
एगोरुअ आभासिअ, वेसाणिअ चेव लंगूले ॥२१४॥ (२०)

अर्थः-सभी द्वीप वेदिका सहित के अन्तवाले हैं। पहले चतुष्क में उनके नाम एकोरुक, आभाषिक, वैषाणिक और लांगूलिक है। (२१४) (२०)

बीअचउक्के हयगय-गोसक्कुलिपुव्वकण्णणामाणो।
आयंसमिंढगअओ-गोपुव्वमुहा य तइअम्मि ॥२१५॥ (२१)

अर्थः-दूसरे चतुष्क में हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण नामक द्वीप हैं। तीसरे चतुष्क में आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख और गोमुख नामक द्वीप हैं। (२१५) (२१)

हयगयहरिवग्घमुहा, चउत्थए असकण्णु हरिकण्णो ।
अकण्ण कण्णपावरणु, दीओ पंचमचउक्कम्मि ॥२१६॥ (२२)

अर्थः-चौथे चतुष्क में हयमुख, गजमुख, हरिमुख और व्याघ्रमुख नामक द्वीप हैं । पाँचवें चतुष्क में अश्वकर्ण, हरिकर्ण, अकर्ण और कर्णप्रावरण नामक द्वीप हैं । (२१६) (२२)

उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदंत छट्ठम्मि ।
सत्तमगे दंतंता, घणलट्ठनिगूढसुद्धा य ॥२१७॥ (२३)

अर्थः-छठे चतुष्क में उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दंत नामक द्वीप हैं। सातवें चतुष्क में दंत अंतवाले घन, लष्ट, निगूढ और शुद्ध नामक द्वीप हैं । (२१७) (२३)

एमेव य सिहरिम्मि वि, अडवीसं सव्वि हुंति छप्पण्णा ।
एएसु जुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ णरा ॥२१८॥ (२४)

अर्थः-इसी प्रकार शिखरी पर्वत (की दाढों में) के ऊपर भी २८ द्वीप हैं। कुल ५६ द्वीप हैं। इन द्वीपों में पल्योपम के असंख्यातवें भाग के आयुष्यवाले युगलिक मनुष्य रहते हैं। (२१८) (२४)

जोअणदसमंसतणू, पिट्ठिकरंडाणमेसि चउसट्ठी ।
असणं च चउत्थाओ, गुणसीदिण-वच्चपालणया ॥२१९॥

अर्थः-ये मनुष्य योजन के १०वें भाग जितने शरीरवाले हैं। उनकी ६४ पसलियाँ हैं । उनका आहार एकान्तर होता है और सन्तानपालन ७९ दिनों का होता है । (२१९) (२५)

पच्छिमदिसि सुत्थिअलवण-सामिणो गोअमु त्ति इगु दीवो ।
उभओ वि जंबुलावण, दुदु रविदीवा य तेसिं च ॥२२०॥ (२६)
जगइपरुप्परअंतरि, तह वित्थर बारजोअणसहस्सा ।
एमेव य पुव्वदिसिं, चंदचउक्कस्स चउ दीवा ॥२२१॥ (२७)

एवं चिअ बाहिरओ, दीवा अट्ठट्ठ पुव्वपच्छिमओ ।
दुदु लवण छ छ धायइ-संड ससीणं रवीणं च ॥२२२॥ (२८)

अर्थः-लवणसमुद्र में पश्चिम दिशा में लवणसमुद्र के स्वामी सुस्थित देव का गौतम नाम का एक द्वीप है । उसके दोनों ओर जंबूद्वीप और लवणसमुद्र के दो-दो सूर्य के दो-दो सूर्यद्वीप हैं । जगती से उनका अन्तर, पारस्परिक अन्तर और विस्तार १२,००० योजन है । इसी प्रकार पूर्व दिशा में चार चन्द्र के चार द्वीप हैं। इसी प्रकार (लवणशिखा के) बाहर की ओर पूर्व-पश्चिम में लवणसमुद्र के २-२ और धातकीखंड के ६-६ चन्द्र के और सूर्य के ८-८ द्वीप हैं । (२२०-२२२) (२६-२८)

एए दीवा जलुवरि, बहिं जोअण सड्ढअट्ठसीइ तहा ।
भागा वि अ चालीसा, मज्झे पुण कोसदुगमेव ॥२२३॥ (२९)

अर्थः- ये द्वीप बाहर की दिशा में (जंबूद्वीप की तरफ) ८८ १/२ ४०/९५ योजन पानी के बाहर है और मध्य में (धातकीखंड की तरफ) २ गाउ पानी के बाहर है।

कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु णिअणिअपहूणं ।
तह लावणजोइसिआ, दगफालीह उड्ढलेसागा ॥२२४॥ (३०)

अर्थ- इन द्वीपों में अपने-अपने स्वामी के कुलगिरि के प्रासाद के समान प्रासाद हैं तथा लवणसमुद्र के ज्योतिष विमान उदकस्फटिक के और ऊपर प्रकाश करनेवाले हैं। (२२४) (३०)

लवणसमुद्र अधिकार समाप्त

• • •

धातकीखंड अधिकार

जामुत्तरदीहेण, दससयसमपिहुल पणसयुच्चेणं ।
उसुयारगिरिजुगेणं, धायइसंडो दुहविहत्तो ॥२२५॥ (१)

अर्थः-दक्षिण-उत्तर लम्बे, १,००० योजन समान चौड़े, ५०० योजन ऊँचे दो इषुकार पर्वतों के द्वारा धातकीखंड दो भागों में विभाजित है। (२२५) (१)

खंडदुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा अरविवररूवा ।
धुरि अंति समा गिरिणो, वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥२२६॥ (२)

अर्थः-दोनों भागों में छ-छ पर्वत और आरा के छिद्र के समान ७-७ क्षेत्र हैं। पर्वत प्रारम्भ और अन्त में समान हैं, क्षेत्र चौड़े और अधिक चौड़े हैं। (२२६) (२)

दहकुंडुंडत्तममेरुमुस्सयं वित्थरं विअड्ढाणं ।
वट्टगिरीणं च सुमेरुवज्जमिह जाण पुव्वसमं ॥२२७॥ (३)

अर्थः-द्रह और कुंडों की ऊँचाई, मेरुपर्वत पर्वत के अतिरिक्त अन्य पर्वतों की ऊँचाई, वैताढ्यपर्वत और मेरुपर्वत के अतिरिक्त वृत्त पर्वतों की चौड़ाई पूर्व की भांति ही जानें। (२२७) (३)

मेरुदुगं पि तह च्चिअ, णवरं सोमणसहिट्ठुवरिदेसे ।
सगअडसहसऊणु त्ति, सहसपणसीइ उच्चत्ते ॥२२८॥ (४)

अर्थः-दोनों मेरुपर्वत भी उसीप्रकार हैं, परन्तु सौमनसवन के नीचे और ऊपर के भाग में ७,००० और ८,००० योजन न्यून है। ऊँचाई में ८५,००० योजन है। (२२८) (४)

तह पणणवई चउणउअ, अद्धचउणउअ अट्ठतीसा य ।
दस सयाइ कमेणं, पणट्ठाण पिहुत्ति हिट्ठाओ ॥२२९॥ (५)

अर्थः-तथा ९,५००, ९,४००, ९,३५०, ३,८००, १,००० योजन नीचे से क्रमशः पाँच स्थानों (मूल, भूतल, नंदनवन, सौमनसवन व शिखर) में चौड़ाई है। (२२९) (५)

णइकुंडदीववणमुह-दहदीहरसेलकमलवित्थारं ।
णइउंडत्तं च तहा, दहदीहत्तं च इह दुगुणं ॥२३०॥ (६)

अर्थः-नदी, कुंड, द्वीप, वनमुख, द्रह, दीर्घपर्वत (वर्षधरपर्वत), कमलों की चौड़ाई और नदी की गहराई तथा द्रह की लम्बाई यहाँ दोगुणी है। (२३०) (६)

इगलक्खु सत्तसहसा, अड सय गुणसीइं भद्दसालवणं ।
पुव्वावरदीहंतं, जामुत्तर अट्ठसीभइअं ॥२३१॥ (७)

अर्थः-भद्रशालवन पूर्व पश्चिम में १,०७,८७९ योजन लम्बा और उसे ८० से विभाजित करने पर जो आता है, उतना दक्षिण-उत्तर चौड़ा है। (२३१) (७)

बहि गयदंता दीहा, पणलक्खूणसयरिसहस दुगुणट्ठा ।
इअरे तिलक्खछप्पण्ण-सहस्स सय दुण्णि सगवीसा ॥२३२॥ (८)

अर्थः-बाहर की तरफ के गजदन्त पर्वत ५,६९,२५९ योजन लम्बे हैं। अन्य (अन्दर की तरफ के गजदंतपर्वत) ३,५६,२२७ योजन लम्बे हैं। (२३२) (८)

खित्ताणुमाणओ सेस-सेलणइविजयवणमुहायामो ।
चउलक्खदीह वासा, वासविजयवित्थरो उ इमो ॥२३३॥ (९)

अर्थः-शेष पर्वत, नदी, विजय तथा वनमुख की लम्बाई क्षेत्र के अनुसार है। क्षेत्र ४ लाख योजन लम्बे हैं। (२३३) (९)

खित्तंकगुणधुवंके, दो सय बारुत्तरेहिं पविभत्ते ।
सव्वत्थ वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवंका ॥२३४॥ (१०)

अर्थः- क्षेत्र के अंक को ध्रुवांक के साथ गुणा करें, उसे २१२ से विभाजित करें. यह सभी क्षेत्रों की चौड़ाई है। यहाँ इसी के अनुसार कुल अंक हैं। (२३४) (१०)

धुरि चउद लक्ख दुसहस, दोसगणउआ धुवं तहा मज्झे।
दुसय अडुत्तर सतस-ट्ठिसहस छव्वीस लक्खा य ॥२३५॥(११)
गुणवीस सयं बत्तीस, सहस गुणयाल लक्ख धुवमंते।
णइगिरिविणमाणविसु-द्धखित्त सोलंसपिहु विजया ॥२३६॥(१२)

अर्थः- प्रारम्भ में ध्रुवांक १४,०२,२९७ योजन है, मध्य में ध्रुवांक २६,६७,२०८ योजन है और अन्त में ध्रुवांक ३९,३२,११९ योजन है। क्षेत्र की चौड़ाई में से नदी, पर्वत और वन के प्रमाण को बाद करके १६ से विभाजित करने पर विजयों की चौड़ाई ज्ञात होती है। (२३५,२३६) (११,१२)

णव सहसा छ सय तिउ-त्तरा य छच्चेव सोल भाया य।
विजयपिहुत्तं णइगिरि-वणविजयसमासि चउलक्खा ॥१३॥

अर्थः-विजयों की चौड़ाई ९,६०३ ६/१६ योजन है। नदी, पर्वत, वन और विजय का योग ४ लाख योजन है। (२३७) (१३)

पुव्वं व पुरी अ तरु, परमुत्तरकुरुसु धाइ महधाइं।
रुक्खा तेसु सुदंसण-पियदंसणनामया देवा ॥२३८॥(१४)

अर्थः-पूर्व की भांति नगरी और वृक्ष हैं। परन्तु उत्तरकुरु में धातकी-महाधातकी वृक्ष हैं। उनके ऊपर सुदर्शन और प्रियदर्शन नामक देव हैं। (२३८) (१४)

धुवरासीसु अ मिलिआ, एगो लक्खो अ अडसयरी सहस्सा।
अट्ठ सया बायाला, परिहितिगं धायइसंडे ॥२३९॥(१५)

अर्थः-ध्रुवराशि में १,७८,८४२ योजन जोड़ने से धातकीखंड में तीन परिधि आती हैं। (२३९) (१५)

धातकीखंड अधिकार समाप्त

कालोदधि अधिकार

कालोओ सव्वत्थ वि, सहसुंडो विलविरहिओ तत्थ।
सुत्थिअसमकालमहा-कालसुरा पुव्वपच्छिमओ ॥२४०॥(१)

अर्थः-कालोद समुद्र हर तरफ से १,००० योजन गहरा और वेला से रहित है। वहाँ पूर्व-पश्चिम में सुस्थित देव जैसे काल-महाकाल देव हैं। (२४०) (१)

लवणम्मि व जहसंभव, ससिरविदीवा इहं पि नायव्वा।
णवरं समंतओ ते, कोसदुगुच्चा जलस्सुवरिं ॥२४१॥(२)

अर्थः-लवणसमुद्र की भांति यहाँ भी यथासम्भव (जैसे भी सम्भव हो, वैसे) चन्द्रद्वीप और सूर्यद्वीप जानें, परन्तु वे चारों ओर से पानी के ऊपर २ गाउ ऊँचे हैं। (२४१) (२)

कालोदधि अधिकार समाप्त

• • •

पुक्खरवरद्वीपार्ध अधिकार

पुक्खरदलबहिजगइ, व्व संठिओ माणुसुत्तरो सेलो।
वेलंधरगिरिमाणो, सीहणिसाइ णिसढवण्णो ॥२४२॥ (१)

अर्थ:-मानुषोत्तर पर्वत वेलंधरगिरि के प्रमाणवाला, बैठे हुए सिंह के समान, निषधपर्वत के वर्णवाला, पुष्करवरार्धद्वीप के बाहर की जगती की भांति स्थित है। (२४२) (१)

जह खित्तणगाईणं, संठाणो धारए तहेव इहं।
दुगुणो अ भद्दसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥२४३॥ (२)

अर्थ:-जिस प्रकार धातकीखंड में क्षेत्र-पर्वतों के संस्थान हैं, उसी प्रकार यहाँ भी हैं। भद्रशालवन दोगुणा है। मेरुपर्वत और इषुकार पर्वत उसीके समान हैं। (२४३) (२)

इह बाहिरगयदंता, चउरो दीहत्ति वीससयसहसा।
तेआलीस सहस्सा, उणवीसहिआ सया दुण्णि ॥२४४॥ (३)

अर्थ:-यहाँ बाहर के ४ गजदंतपर्वत २०,४३,२१९ योजन लम्बे हैं। (२४४) (३)

अब्भिंतर गयदंता, सोलस लक्खा य सहस छव्वीसा।
सोलहिअं सयमेगं, दीहत्ते, हुंति चउरो वि ॥२४५॥ (४)

अर्थ:-अन्दर के चारों गजदंतपर्वत १६,२६,११६ योजन लम्बे हैं। (२४५) (४)

सेसा पमाणओ जह, जंबूदीवाउ धाइए भणिआ।
दुगुणा समा य ते तह, धाइअसंडाउ इह णेआ ॥२४६॥ (५)

अर्थ:-शेष क्षेत्र-पर्वत आदि जिसप्रकार जम्बूद्वीप की अपेक्षा धातकीखंड में दोगुने और समान कहे गए थे, उसीप्रकार वे धातकीखंड की अपेक्षा यहाँ (दोगुने और समान) जानें। (२४६) (५)

अडसी लक्खा चउदस, सहसा तह णव सया य इगवीसा।
अब्भिंतर धुवरासी, पुव्वुत्तविहीइ गणिअव्वो ॥२४७॥ (६)

अर्थ:-८८,१४,९२१ योजन यह अभ्यंतर ध्रुवराशि पूर्व में कथित विधि से जानें। (२४७) (६)

इग कोडि तेर लक्खा, सहसा चउचत्त सग सय तियाला।
पुक्खरवरदीवड्ढे, धुवरासी एस मज्झम्मि ॥२४८॥ (७)

अर्थ:-१,१३,४४,७४३ योजन इस पुष्करवरद्वीपार्ध में मध्य ध्रुवराशि है। (२४८) (७)

एगा कोडि अडतीस लक्ख चउहत्तरी सहस्सा य।
पंच सया पणसट्ठा, धुवरासी पुक्खरद्धंते ॥२४९॥ (८)

अर्थ:-१,३८,७४,५६५ योजन इस पुष्करवरद्वीपार्ध के अन्त में ध्रुवराशि है। (२४९) (८)

गुणवीस सहस सग सय, चउणउअ सवाय विजयविक्खंभो।
तह इह बहिवहसलिला, पविसंति अ णरणगस्साहो ॥२५०॥ (९)

अर्थ:-विजय की चौड़ाई १९,७९४ १/४ योजन है तथा यहाँ बाहर

बहनेवाली नदियाँ मानुषोत्तरपर्वत के नीचे प्रवेश करती हैं। (२५०) (९)

पुक्खरदलपुव्वावर-खंडंतो सहस दुग पिहु दुकुंडा ।
भणिया तट्ठाणं पुण, बहुस्सुया चेव जाणंति ॥२५१॥ (१०)

अर्थः-पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्व-पश्चिम विभाग में २,००० योजन चौड़े दो कुंड कहे गए हैं। उनका स्थान तो बहुश्रुत ही जानते हैं। (२५१) (१०)

इह पउममहापउमा, रुक्खा उत्तरकुरुसु पुव्वं व ।
तेसु वि वसंति देवा, पउमो तह पुंडरीओ अ ॥२५२॥ (११)

अर्थः-यहाँ पूर्व की भांति उत्तरकुरु में पद्म और महापद्म वृक्ष हैं। उनके ऊपर पद्म और पुंडरीक देव निवास करते हैं। (२५२) (११)

दोगुणहत्तरि पढमे,
अड लवणे बीअदिवि तइअद्धे ।
पिहु पिहु पण सय चाला,
इग णरखित्ते सयलगिरिणो ॥२५३॥ (१२)

तेरह सय सगवण्णा, ते पणमेरुहिं विरहिआ सव्वे ।
उस्सेहपायकंदा, माणुससेलो वि एमेव ॥२५४॥ (१३)

अर्थः-पहले जम्बूद्वीप में २६९, लवणसमुद्र में ८, दूसरे द्वीप (धातकीखंड) में और तीसरे अर्धद्वीप में विभिन्न ५४०पर्वत हैं। इसप्रकार मनुष्यक्षेत्र में कुल पर्वत १,३५७ हैं। ५ मेरुपर्वत के अतिरिक्त अन्य सभी पर्वत ऊँचाई के लगभग चौथे भाग भूमि में हैं। मानुषोत्तरपर्वत भी इसी प्रकार हैं। (२५३,२५४) (१२,१३)

धुवरासीसु तिलक्खा, पणपण्ण सहस्स छ सय चुलसीआ ।
मिलिया हवंति कमसो, परिहितिगं पुक्खरद्धस्स ॥२५५॥ (१४)

अर्थः-ध्रुवराशियों में ३,५५,६४० जोड़ने से पुष्करवरार्धद्वीप की क्रमशः तीन परिधियाँ होती हैं। (२५५) (१४)

णइदहघणथणिआगणि-
जिणाइणरजम्ममरणकालाइ ।
पणयाललक्खजोअण-
णरखित्तं मुत्तु णो पु(प)रओ ॥२५६॥ (१५)

अर्थः- ४५लाख योजन के मनुष्यक्षेत्र को छोड़कर फिर नदी, द्रह, बादल, बिजली, अग्नि, तीर्थंकर आदि मनुष्य के जन्म-मृत्यु, काल इत्यादि नहीं हैं। (२५६) (१५)

पुष्करवरार्धद्वीप अधिकार समाप्त

• • •

मनुष्यक्षेत्रनी बहारनो अधिकार

चउसु वि उसुआरेसुं, इक्किक्कं णरणगम्मि चत्तारि।
कूडोवरि जिणभवणा, कुलगिरिजिणभवणपरिमाणा ॥२५७॥(१)

अर्थः-चारों इषुकार पर्वतों के ऊपर १-१ जिनभवन है। मानुषोत्तर पर्वतों के ऊपर ४ कूटों के ऊपर ४ जिनभवन हैं। ये जिनभवन कुलगिरि के जिनभवनों के समान परिमाणवाले हैं। (२५७) (१)

तत्तो दुगुणपमाणा, चउदारा थुत्तवण्णिअसरूवे।
णंदीसरि बावण्णा, चउ कुंडलि रुअगि चत्तारि ॥२५८॥(२)

अर्थः-उससे दोगुने प्रमाणवाले, चार द्वारवाले ५२ जिनभवन, स्तोत्र में जिनका वर्णन किया गया है, ऐसे नंदीश्वरद्वीप में हैं, ४ जिनभवन कुण्डलद्वीप में हैं और ४ जिनभवन रुचकद्वीप में हैं। (२५८) (२)

बहुसंखविगप्पे रुअगदीवि उच्चत्ति सहस चुलसीइ।
णरणगसम रुअगो पुण, वित्थरि सयठाणि सहसंको ॥२५९॥(३)

अर्थः-अनेक संख्याओं के विकल्पवाले रुचकद्वीप में ऊँचाई में ८४,००० योजन, विस्तार में मानुषोत्तरपर्वत के समान, परन्तु १०० के स्थान पर १,००० के अंक जितने (अर्थात् १०,०२२ योजन) रुचक पर्वत है। (२५९) (३)

तस्स सिहरम्मि चउदिसि, बीअसहसीगिगु चउत्थि अट्ठट्ठा।
विदिसि चऊ इअ चत्ता, दिसिकुमरी कूडसहसंका ॥२६०॥(४)

अर्थः-उसके शिखर पर चारों दिशाओं में दूसरे हजार योजन में १-१ कुट तथा चौथे हजार योजन में ८-८ कुट और विदिशा में ४ सहस्रांक कुट हैं - इसप्रकार दिक्कुमारियों के ४० कुट हैं। (२६०) (४)

इह कइवयदीवोदहि-विआरलेसो मए विमइणावि।
लिहिओ जिणगणहरगुरु-सुअसुअदेवीपसाएण ॥२६१॥(५)

अर्थः-इसप्रकार बुद्धिरहित मैं तीर्थंकर, गणधर, गुरु, श्रुत और श्रुतदेवी की कृपा से कुछ द्वीप-समुद्रों का अल्प विचार लिखा। (२६१) (५)

सेसाण दीवाण तहोदहीणं,
विआरवित्थारमणोरपारं।
सया सुआओ परिभावयंतु,
सव्वेंपि सव्वंन्नुमइक्कचित्ता ॥२६२॥(६)

अर्थः-शेष द्वीपों, और समुद्रों के विषय में असीम ज्ञान भी विचार के विस्तार को सर्वज्ञमत में एकचित्तवाले जीव सदा श्रुत में से जानें। (२६२) (६)

सूरीहि जं रयणसेहरनामएहिं,
अप्पत्थमेव रइअं णरखित्तविक्खं।
संसोहिअं पयरणं सुअणेहि लोए,
पावेउ तं कुसलरंगमइं पसिद्धिं ॥२६३॥(७)

अर्थः- रत्नशेखर नामक आचार्य ने स्वयं के लिए ही मनुष्यक्षेत्र की अपेक्षावाले जिस प्रकरण की रचना की और सज्जनों ने भलीभांति शुद्ध किया, वह लोक में कुशल और आनन्दमय प्रसिद्धि को प्राप्त करे। (२६३) (७)

मनुष्यक्षेत्र के बाहर का अधिकार समाप्त
लघुक्षेत्रसमास मूल गाथा-शब्दार्थ समाप्त

• • •

अहो ! श्रुतम् स्वाध्याय संग्रह में प्रकाशित होनेवाले हिन्दी ग्रन्थो का विवरण

१. जीवविचार - नवतत्त्व
२. दंडक - लघु संग्रहणी
३. भाष्यत्रयम् - चैत्यवंदन / गुरुवंदन / पच्चखाण भाष्य
४. कर्मग्रंथ १-२-३
५. ज्ञानसार
६. उपदेशमाला
७. अध्यात्मसार
८. शान्तसुधारस
९. प्रशमरति
१०. वैराग्यशतक - इन्द्रिय पराजय शतक
११. अध्यात्म कल्पद्रुम
१२. अष्टक प्रकरण
१३. तत्त्वार्थसूत्र
१४. वीतरागस्तोत्रम्
१५. बृहत् संग्रहणी
१६. लघु क्षेत्र समास
१७. बृहत् क्षेत्र समास
१८. योगशास्त्र

• • •

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार परिचय

(१) शा. सरेमल जवेरचंदजी बेडावाला परिवार द्वारा स्वद्रव्य से संवत् २०६३ में निर्मित...

(२) गुरुभगवंतो के अभ्यास के लिये २५०० प्रताकार ग्रंथ व २१००० से ज्यादा पुस्तको के संग्रह में से ३३००० से ज्यादा पुस्तके इस्यु की है...

(३) श्रुतरक्षा के लिए ४५ हस्तप्रत भंडारो को डिजिटाईजेशन के द्वारा सुरक्षित किया है और उस में संग्रहित ८०००० हस्तप्रतो में से १८०० से ज्यादा हस्तप्रतो की झेरोक्ष विद्वान गुरुभगवंतो को संशोधन संपादन के लिये भेजी है...

(४) जीर्ण और प्रायः अप्राप्य २२२ मुद्रित ग्रंथो को डिजिटाईजेशन करके मर्यादित नकले पुनः प्रकाशित करके श्रुतरक्ष व ज्ञानभंडारो को समृद्ध बनाया है...

(५) अहो ! श्रुतज्ञानम् चातुर्मासिक पत्रिका के ४६ अंक श्रुतभक्ति के लिये स्वद्रव्य से प्रकाशित किये है...

(६) ई-लायब्रेरी के अंतर्गत ९००० से ज्यादा पुस्तको का डिजिटल संग्रह पीडीएफ उपलब्ध है, जिसमें से गुरुभगवंतो की जरुरियात के मुताबिक मुद्रित प्रिन्ट नकल भेजते है...

(७) हर साल पूज्य साध्वीजी म.सा. के लिये प्राचीन लिपि (लिप्यंतरण) शीखने का आयोजन...

(८) बच्चों के लिये अंग्रेजी में सचित्र कथाओं को प्रकाशित करने का आयोजन...

(९) अहो ! श्रुतम् ई परिपत्र के द्वारा अद्यावधि अप्रकाशित आठ कृतिओं को प्रकाशित की है...

(१०) नेशनल बुक फेर में जैन साहित्य की विशिष्ट प्रस्तुति एवं प्रचार प्रसार।

(११) पंचम समिति के विवेकपूर्ण पालन के लिये उचित ज्ञान का प्रसार एवं प्रायोगिक उपाय का आयोजन।

(१२) चतुर्विध संघ उपयोगी प्रियम् के ६० पुस्तको का डिजिटल प्रिन्ट द्वारा प्रकाशन व गुरुभगवंत व ज्ञानभंडारो के भेट।

• • •